सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-32 अंक-3 7 फरवरी, 2017 मुख्य संपादक कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती कुल पृष्ठ 8 मूल्य : 2 रुपये

केन्द्रीय बजट 2017-18

तथ्यों को दबाने वाला और सच्चाई को छिपाने वाला एक दस्तावेज

जो शासक पूंजीपति वर्ग के निहित स्वार्थ साधने वाला और जनहित पर कुठाराघात करने वाला है – एसयूसीआई (सी)

सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने केन्द्रीय बजट 2017-18 पर कड़ी टिप्पणी करते हुए आज दिनांक 01-02-2017 को निम्नलिखित बयान जारी किया :

''जब देश की जनता बेलगाम महंगाई, बढ़ती बेरोजगारी, तेजी से हो रही रोजगारहीनता, घटती आमदनी, बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव व शिक्षा की कमी आदि के रूप में भयंकर आर्थिक हमलों की शिकार है और नोटबंदी से उसकी दुर्दशा व मुश्किलें कई गुना बढ़ी हैं, तब केन्द्रीय बजट 2017-18 ने इन मुद्दों को छुआ तक नहीं है। उल्टे, यह बजट परम्परागत ढंग से महज झूठी आशा जगाने, आंकड़ों का बखान करने, टैक्सों में छूट के नाम पर दिखावेबाजी करने, कारपोरेट टैक्स में निरन्तर कटौती करने, एफडीआई को बढ़ावा देने और डिजिटल युग के आगमन तक ही सीमित रहा है। साथ ही, यह गरीबी उन्मूलन के खोखले वादों, किसानों की आमदनी बढ़ाने और पिछड़े व दबे-कुचले लोगों की स्थिति में सुधार लाने के झांसों से भरा है। हालांकि वित्तमंत्री ने बेहतर प्रबंधन के नाम पर हर तरह के मार्गो के बीच मल्टी मॉडल परिवहन आयोजना की बेहद अलोकतांत्रिक कार्रवाई को उचित ठहराने की कोशिश की है लेकिन उनका रुझान रेलवे का ज्यादा से ज्यादा निजीकरण करने पर है। इसमें 'खर्च व प्रतिस्पर्धा के आधार पर किरायों का निर्धारण' के नाम पर यात्रियों की जेब पर डाका डाला जाएगा। यात्री सेवाओं और समय के पालन में निरन्तर तेजी से आ रही गिरावट के अलावा बढ़ती रेल दुर्घटनाओं के बीच सुरक्षा का मुद्दा एक गंभीर सवाल बन गया है। लेकिन सुरक्षा मामलों को सुनिश्चित करने के लिए किसी भी समयबद्ध कार्यक्रम का ऐलान नहीं किया गया है जैसे इस क्षेत्र में खाली पड़े पदों को भरने और ड्युटी में कोताही बरतने या चौकसी में ढील दिखाने वालों पर कड़ी निगरानी रखने, जिम्मेदारी तय करने जैसे कोई कदम नहीं उठाए गए हैं।

यह बताने की परवाह किये बिना कि नोटबंदी से कितना काला धन बरामद किया है, क्या भ्रष्टाचार पर रोक लगी है, क्या जाली नोटों का चलन रुक गया है और क्या आतंकवादियों को वित्तपोषण बंद हो गया है, इन सब बातों को छुपाने के लिए वित्तमंत्री महज निराधार दावे ठोकते नजर आये हैं कि ''नोटबंदी एक साहसिक एवं निर्णायक उपाय है ... तथा ...दीर्घावधिक लाभ सृजित होने की प्रबल सम्भावना है।'' किसानों में आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं, लाभकारी दाम न मिलने और मजबूरी में औने-पौने दामों पर बिचौलियों को अपनी फसल बेचने की मजबूरी, किसानों की बढ़ती गरीबी और भूमिहीन व प्रवासी मजदूर बनने की बदतरीन हालत को दरकिनार कर बजट में कृषि क्षेत्र के लिए धनराशि का आवंटन बढ़ाने का ढोल पीट कर उन्होंने एक बार फिर ग्रामीण गरीबों को झांसा देने की कोशिश की है। इसी तरह, आर्थिक सर्वेक्षण में रोजगारहीन आर्थिक विकास के तथ्य को स्वीकार करने के बावजूद मेट्रो रेल में देशी सामानों व हार्डवेयर-सॉफ्टवेयरों के इस्तेमाल के द्वारा नई सम्भावना दर्शाने व मनरेगा में कुछ धनराशि बढ़ाने के सिवा बजट में नये रोजगार सृजन का कोई जिक्र नहीं किया। यह जानते हुए भी कि एकाधिकारी नियंत्रित संकटग्रस्त पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में यह सम्भव ही नहीं है, उनका पूरा जोर कौशल विकास व युवा उद्यमशीलता पर है जबकि

(शेष पृष्ठ 8 पर)

चौथा दिल्ली राज्य छात्र सम्मेलन सम्पन्न

दिल्ली : ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन का चौथा दिल्ली राज्य सम्मेलन 31 जनवरी को हकीकत नगर के सामुदायिक भवन नजदीक दिल्ली विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में स्कूल-कॉलेजों से भारी संख्या में छात्र-छात्राएँ शामिल हुए। सम्मेलन में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन संघर्ष पर ए.आई.डी.एस.ओ. द्वारा दिल्ली में किए गए महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की तस्वीरों और नवम्बर क्रांति की शिक्षाओं से सम्बन्धित प्रदर्शनी लगाई गई थी। सम्मेलन की शुरूआत में प्रदर्शनी का उद्घाटन रिसेप्शन कमेटी के अध्यक्ष प्रो. नरेन्द्र शर्मा तथा सचिव डॉ. विनय कुमार द्वारा किया गया। इसके बाद नेताओं द्वारा शहीद वेदी पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजली दी गई। सम्मेलन की शुरूआत ए.आई.डी.एस.ओ. का झण्डा फहराने व ए.आई.डी.एस.ओ. पर रचित गान से हुई। सम्मेलन की कार्रवाई चलाने के लिए ए.आई.डी.एस.ओ. के दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉ. भास्करानन्द मुण्डेपी के नेतृत्व में एक 4 सदस्यीय अध्यक्षमण्डल बनाया गया जिसमें ए.आई.डी.एस.ओ. के दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य कॉ. आसिफ, कॉ. रवि कुमार तथा कॉ. मौसम कुमारी शामिल थीं। सम्मेलन में चर्चा के लिए मुख्य प्रस्ताव समेत पाँच प्रस्ताव रखे गए जिनमें छात्रों के जनवादी अधिकारों के हनन, शिक्षण संस्थानों में छात्र-छात्राओं पर हमलों, आठवीं कक्षा तक पास-फेल प्रणाली खत्म कर दिए जाने की नीति और नोटबंदी के खिलाफ प्रस्ताव शामिल थे। सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए। सम्मेलन में सांगठनिक रिपोर्ट ए.आई.डी.एस.ओ. के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रशान्त कुमार द्वारा रखी गई। उपस्थित छात्र प्रतिनिधियों को ए.आई.डी.एस.ओ. के महासचिव कॉ. अशोक मिश्र, एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्राण शर्मा तथा ए.आई.डी.एस.ओ. की अखिल भारतीय सचिवमण्डल सदस्य कॉ. झरना मालवीय ने संबोधित किया।

दिल्ली : छात्र सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कॉ.अशोक मिश्र

सम्मेलन के अंत में एक 20 सदस्यीय दिल्ली राज्य काउंसिल चुनी गयी जिसके अध्यक्ष कॉ. प्रशान्त कुमार, उपाध्यक्ष कॉ. राहुल सरकार, सचिव कॉ. श्रेया सिंह, कार्यालय सचिव कॉ. सुनिधि शर्मा, वित्त सचिव कॉ. सौम्या सामल तथा सचिवमण्डल सदस्य कॉ. श्रीराम सहनी, कॉ. राहुल शर्मा, कॉ. अशरफ अली, कॉ. सुमन, कॉ. प्रियंका चौरसिया व कॉ. सिंधु सोम चुने गये। सभा में प्रगतिशील गीत और आज के समाज में महिलाओं की स्थिति पर एक नाटक भी प्रस्तुत किया गया। शिक्षा जगत से जुड़ी समस्याओं के खिलाफ छात्र आंदोलन को मजबूत करते हुए ए.आई.डी.एस.ओ. को एक नए मुकाम पर पहुँचाने के संकल्प के साथ सम्मेलन का समापन हुआ।

अमेरिका में ट्रंप-विरोधी प्रदर्शनों के साथ एंटी-इंपीरियलिस्ट फोरम ने किया एकजुटता का इजहार

नस्ल-विद्वेषी, नर-नारी के आधार पर भेदभाव करने वाले, प्रवासी-विरोधी और लोकतंत्रविरोधी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ पूरे अमेरिका में जो प्रबल विरोध शुरू हुआ है उसका ऑल इण्डिया एंटी-इंपीरियलिस्ट फोरम के अध्यक्ष डॉ. के.आर. चौधरी ने समर्थन किया है। 24 जनवरी को जारी एक बयान में उन्होंने कहा, 'सभी पेशों के लाखों लाख लोग अमेरिका की सरजमीं पर इस विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए। छात्र, मजदूर, गरीब लोग, प्रवासी, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के साथ काफी संख्या में महिलाएं भी इस रोष प्रदर्शन में सड़कों पर उतर आई, जो अमेरिका में एक अभूतपूर्व घटना है।

डोनाल्ड ट्रंप मेक्सिको की सरहद पर एक दीवार खड़ी करने, लाखों लाख प्रवासियों को देश से भगाने, मुसलमानों के लिए अलग रजिस्ट्री व्यवस्था करने, कैदियों पर अत्याचार करने और किसी भी समय परमाणु हथियार इस्तेमाल करने की धमकी दे रहे हैं। उनकी बातें कई बार मानसिक विकारग्रस्त के प्रलाप की तरह सुनाई देती हैं। ऐसे एक शख्स के घोर दक्षिणपंथी कार्यक्रम और प्रस्तावित नीति का विरोध करने का अधिकार लोगों को है। डोनाल्ड ट्रंप सरीखा एक शख्स राष्ट्रपति चुना जा सकता है यह पूंजीवाद के घनघोर संकट को प्रतिफलित करता है। संकट से निजात पाने की कोई उम्मीद न पाकर पूजीवाद आज घोर दक्षिणपंथी उग्र अंधराष्ट्रवादी भाषणबाजी से लोगों को बेवकूफ बनाकर जनजीवन के ज्वलंत मुद्दों से ध्यान हटाना चाहता है। चाहे डेमोक्रेटिक पार्टी हो या रिपब्लिकन पार्टी, कोई भी पार्टी जनजीवन की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती। ये एक ही तरह बुर्जुआ वर्ग की हितरक्षक, जनविरोधी नीति राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय

(शेष पृष्ठ 8 पर)

देश भर में मनाया गया लेनिन स्मृति दिवस

ग्वालियर (म.प्र.) : 21 जनवरी को सर्वहारा के महान नेता, मार्क्सवादी दार्शनिक, कॉमरेड लेनिन के स्मृति दिवस के अवसर पर एक सभा का आयोजन स्थानीय थाठीपुर स्थित हाल में किया गया।

सभा के मुख्य वक्ता के रूप में उड़ीसा राज्य कमेटी के सदस्य कॉ. शंकर दासगुप्ता ने सम्बोधित किया। उनका वक्तव्य 'पूंजीवाद के चौतरफा संकट और महान नवम्बर क्रांति एवं कॉमरेड लेनिन के संघर्ष' के विषय पर केन्द्रित था। सभा की अध्यक्षता पार्टी के जिला सचिव कॉ. सुनील गोपाल ने की। सभा में शहर के बुद्धिजीवियों, प्रोफेसरों, पत्रकारों, छात्र-नौजवानों ने भाग लिया।

इन्दौर (म.प्र.) : एसयूसीआई (सी) पार्टी की इन्दौर इकाई की ओर से महान लेनिन की 93वीं बरसी पर स्मृति सभा आयोजित की गयी। स्मृति सभा की मुख्य वक्ता एसयूसीआई (सी) की सदस्या श्रीमती रचना अग्रवाल थी और सभा की अध्यक्षता अर्शी खान ने की। कार्यक्रम में नवम्बर क्रान्ति पर आधारित गीत भी गाये गये।

गुना (म.प्र) : सर्वहारा के महान नेता, रूस में 1917 में हुई नवम्बर क्रान्ति के मार्गदर्शक महान लेनिन के स्मृति दिवस के अवसर पर हनुमान चौराहा के पास लॉज में रविवार को स्मृति सभा एसयूसीआई(सी) पार्टी द्वारा की गई। इस अवसर पर सभा के मुख्य वक्ता उड़ीसा से आये एसयूसीआई(सी) के केन्द्रीय स्टाफ सदस्य कॉ. शंकर दासगुप्ता ने सभा को सम्बोधित किया और कहा कि क्रान्ति के बाद रूस में शिक्षा, इलाज, बिजली, पानी सहित तमाम मूलभूत जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी सरकार ने ले ली थी। 1932 तक आते-आते सोवियत संघ में एक भी बेरोजगार नहीं रहा। वेश्यावृत्ति व बाल मजदूरी मात्र 8 वर्षों में खत्म की गई। खेती में उत्पादन के लिए सबसे बड़ा ट्रेक्टर का कारखाना खोला गया। 1930 की आर्थिक मन्दी से रूस पूरी तरह मुक्त था। उन्होंने कहा कि लेनिन के नेतृत्व में हुई महान नवंबर क्रान्ति ने बड़े स्पष्ट व जोरदार ढंग से सिद्ध कर दिखाया कि महान कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धान्त कोई कपोल कल्पना नहीं है। बल्कि वास्तविकता यह है कि वास्तविक स्वतंत्रता, बराबरी व भाईचारे को धरती पर साकर करना संभव है।

सभा की अध्यक्षता पार्टी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. लोकेश शर्मा ने की। संचालन जिला सचिव कॉ. प्रदीप आरबी ने किया।

दुर्ग (छ.ग.) : महान नवम्बर क्रान्ति शताब्दी वर्ष पर दुर्ग में सभा हुई जिसे एसयूसीआई(सी) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉ. गोपाल कुंडू ने सम्बोधित किया। उन्होंने पूंजीवादी शोषण, वर्तमान पूंजीवादी बाजार संकट, मार्क्सवाद के आधार पर सामाजिक परिवर्तन, रूस में समाजवादी क्रान्ति व भारत में पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के तत्व-सिद्धांतों पर चर्चा की।

भिवानी (हरियाणा) : एसयूसीआई(सी) भिवानी जिला कमेटी की ओर से 21 जनवरी को महान लेनिन की 93वीं बरसी पर यहां नेहरू पार्क में स्मृति सभा की गई। सभा की अध्यक्षता जिला कमेटी सदस्य कॉ. जिले सिंह ने की। सभा के मुख्य वक्ता पार्टी के जिला सचिव कॉ. रामफल ने लेनिन के जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सन् 1917 की रूस की नवम्बर समाजवादी क्रान्ति के

शिल्पी महान लेनिन की 21 जनवरी 1924 को हुई मृत्यु विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के लिए एक भारी धक्का थी। यह दिन दुनिया के मेहनतकश लोगों के लिए जहाँ गहरी व्यथा-वेदना का दिन है, वहीं निराशा-हताशा को छोड़कर उनके दिखाये रास्ते पर चलने की शपथ लेने का भी दिन है। उन्होंने कहा कि ऐसे चंद व्यक्ति हैं जिन्हें दुनिया याद करती है। लेनिन ऐसी ही एक महान विश्व हस्ती हुये हैं। उन्होंने सही क्रान्तिकारी पार्टी बोलशेविक पार्टी बनाई थी। 100 साल पहले उनके नेतृत्व में रूस में मजदूर-किसानों की पहली समाजवादी क्रान्ति सम्पन्न हुई थी। शोषणकारी पूंजीवाद को उखाड़ फेंक कर समाजवाद कायम हुआ था। राज-काज की बागडोर मजदूर-किसानों के हाथों में आई थी। वहां की शोषित-पीड़ित जनता को पूंजीवादी शोषण के जुए से मुक्ति मिली थी। लेनिन ने यह सिद्ध कर दिखलाया था कि कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धान्त कोई कपोल कल्पना नहीं, कोई जड़सूत्र नहीं, बल्कि क्रिया का मार्गदर्शक है। रूस की सरजमीन पर मार्क्सवाद को प्रयोग करते हुए क्रान्तिकारी पार्टी को मजबूत करने और मेहनतकश जनता को संगठित कर क्रान्तिकारी आन्दोलन गठित करने की प्रक्रिया में ही लेनिन ने विश्व साम्यवादी आन्दोलन के सामने कुछ अमूल्य शिक्षाएं पेश की। लेनिन ने मार्क्सवाद को और भी उन्नत, विकसित व समृद्ध किया। इसलिए लेनिनवाद है वर्तमान युग का मार्क्सवाद। लेनिन ने कहा था कि क्रान्ति के लिए हर देश में क्रान्तिकारी सिद्धान्त व क्रान्तिकारी पार्टी का होना एक अनिवार्य शर्त है। उन्नत नीति-नैतिकता के आधार पर, सही रास्ते पर, सही नेतृत्व में समाजवादी क्रान्ति के परिपूरक जनआन्दोलन ही मुक्ति का एकमात्र रास्ता है।

पार्टी के जिला कमेटी सदस्य धर्मवीर सिंह ने भी सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने महान लेनिन को श्रद्धांजली देते हुए उनके दिखाये रास्ते पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि आजादी आन्दोलन के दिनों इस देश में कोई सही कम्युनिस्ट पार्टी न होने के कारण जनता की इतनी बड़ी कुर्बानी, क्रान्ति की इतनी जोरदार सम्भावनाएं बेकार गई। देश में पूँजीवाद कायम हो गया। फलस्वरूप बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, किसानों की आत्महत्याएं, अनपढ़ता, बिना इलाज के होने वाली मौतें, नारी देह का फलता-फूलता व्यापार, बलात्कार, भ्रष्टाचार, नीति-नैतिकता में गिरावट आदि सभी समस्याएं घनघोर होती जा रही हैं। उन्होंने पार्टी को मजबूत करने और जनजीवन की ज्वलंत मांगों को लेकर जोरदार जन आन्दोलन गठित करने पर बल दिया। उन्होंने लघु सचिवालय पर धरना-प्रदर्शनों पर लगाई रोक को लोकतंत्रिक अधिकारों का हनन बताते हुए इस जनविरोधी और बेतुके फरमान को तुरंत वापस लेने की मांग की।

गुड़गांव : 21जनवरी को स्थानीय नेहरू पार्क में दुनिया में पहली समाजवादी क्रांति के प्रणेता महान लेनिन की बरसी पर एसयूसीआई(सी) की स्थानीय कमेटी द्वारा श्रद्धांजली सभा की गई। सभा की अध्यक्षता जिला सचिव कॉमरेड श्रवण कुमार ने की। मुख्य वक्ता राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड बलवान धनखंड ने बताया कि रूसी क्रांति दुनिया में पहले से हुई क्रांतियों से भिन्न इसलिए थी कि रूसी समाजवादी क्रांति के द्वारा मानव द्वारा मानव के शोषण को खत्म कर दिया गया। महान लेनिन की सीखों को आत्मसात करके ही भारत व पूरी दुनिया में समाजवाद के रास्ते साम्यवाद सम्भव हो सकता है। उन्होंने बताया कि समाजवाद ने जनता को रोटी, कपड़ा, मकान, इलाज व शिक्षा की गारन्टी दी थी। अत: पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ कर समाजवादी क्रांति स्थापित करने से ही महंगाई, बेरोजगारी, भूखमरी, शिक्षा व इलाज का अभाव, व्यभिचार, नशाखोरी व अन्य सभी समस्याओं का जड़ से खात्मा होगा।

सोनीपत (हरियाणा) : सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) जिला सोनीपत कमेटी ने महान् लेनिन की 93वीं बरसी पर छोटूराम धर्मशाला में स्मृति सभा की जिसकी अध्यक्षता हरियाणा प्रदेश कमेटी सदस्य कॉ. हरिप्रकाश ने की। मुख्य वक्ता पार्टी जिला सचिव कॉ. ईश्वर सिंह राठी थे। सभा का संचालन ईश्वर सिंह दहिया ने किया। सभा से पहले का. हरिप्रकाश व ईश्वर सिंह राठी ने लेनिन की फोटो पर पुष्प अर्पित किये। मुख्य वक्ता का. ईश्वर सिंह राठी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्तालिन की 1953 में मृत्यु के बाद लेनिन की शिक्षाओं का सही अनुकरण नहीं किया गया जिससे समाजवाद को भारी धक्का लगा।

सभा में जिला कमेटी सदस्य कॉ. रामकरण व इन्द्र सिंह ने भी अपना वक्तव्य रखा।

हिसार : 21 जनवरी को एसयूसीआई(सी) लोकल कमेटी हांसी की ओर से लेनिन स्मृति सभा की गई। इसकी अध्यक्षता कॉ सूरत सिंह थुराना ने की। मुख्य वक्ता पार्टी के जिला प्रभारी कॉ. मेहर सिंह थे। कॉ. सत्यनारायण, हवा सिंह, दिलबाग खोखर, कुलदीप थुराना ने भी सभा को सम्बोधित किया।

रेवाड़ी : 21जनवरी को दुनिया में पहली समाजवादी क्रांति के प्रणेता महान लेनिन की 93वीं मृत्यु वार्षिकी पर एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के तत्वावधान में स्थानीय नेहरू पार्क में श्रद्धांजली सभा की गई। सभा की अध्यक्षता जिला सचिव कॉमरेड बलराम ने की। पार्टी के जिला सचिव कॉ. राजेन्द्र सिंह ने भी सभा को सबोधित किया। मुख्य वक्ता राज्य कमेटी सचिव कॉमरेड सत्यवान ने कहा कि मानव समाज के विकास क्रम में शोषण-जुल्म को खत्म करने के लिए हर देश में कुछ इन्सानों ने अग्रणी भूमिका निभाई है। वर्तमान युग में लेनिन ऐसी ही एक महान हस्ती हुए हैं। वे न केवल रूस के ऊंचे दर्जे के क्रान्तिकारी नेता थे बल्कि मानव जाति की श्रेष्ठ सन्तान भी थे। 7 नवम्बर 1917 को सफल हुई पहली समाजवादी क्रान्ति से हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों नेताजी सुभाष बोस, भगत सिंह, बिस्मिल, अश्फाक उल्ला आदि प्रभावित हुए थे। प्रेमचंद, शरतचन्द्र, रवीन्द्रनाथ, नजरूल आदि साहित्यकार गहरे प्रभावित हुए थे। इन्कलाब जिन्दाबाद आज देश के शोषित अवाम का नारा बन चुका है। उन्होंने दिखाया था कि रूस में हुई प्रतिक्रान्ति से समाजवाद को लगा धक्का अस्थायी है। वहां फिर लेनिन-स्तालिन के फोटो लेकर लोग सड़कों पर उतरे हुए हैं। क्रान्ति पुन: होगी। क्रान्ति की जीत अवश्यम्भावी है। सामाजिक परिवर्तन का यह अटल नियम है।

सभा का संचालन कृषक खेत मजदूर संगठन के जिला कमेटी सदस्य कॉ. रामकुमार ने किया। पार्टी के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. विजय कुमार भी उपस्थित रहे।

नारनौल : 21 जनवरी को महान लेनिन की बरसी पर एसयूसीआई(सी) के कॉ. बलबीर सिंह की अध्यक्षता में स्थानीय यादव धर्मशाला में स्मृति सभा की गई। पार्टी के जिला प्रभारी कॉ. ओमप्रकाश ने लेनिन के जीवन-संघर्ष से सीख लेने की अपील करते हुए पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के खिलाफ आन्दोलन में आगे आने की अपील की।

जमशेदपुर (झारखण्ड) में 21 जनवरी को महान लेनिन को याद करते हुए एसयूसीआई(सी) के कार्यकर्ता।

बालंगीर (ओडिशा) : महान नवम्बर क्रान्ति शताब्दी वर्ष यहां एक अलग अंदाज में मनाया गया। गणसांस्कृतिक मंच ने आकर्षक रेत कला प्रदर्शनी आयोजित की। अन्य कलाकारों के अलावा एसयूसीआई(सी) के स्थानीय सांगठनिक कमेटी सचिवं कॉ. ओमप्रकाश साहू इस प्रदर्शनी के प्रमुख शिल्पी थे। नेताजी सुभाष जयन्ती पर भी ऐसी ही प्रदर्शनी लगाई गई। एआईडीएसओ के महासचिव कॉ. अशोक मिश्र ने कार्यक्रम का संचालन किया। यह कार्यक्रम 12 जनवरी से 15 जनवरी तक चला। बुक स्टाल व सुक्ति प्रदर्शनी भी लगाई गई।

लेनिन थे सबसे ऊँचे दर्जे के नेता, एक पहाड़ी बाज, जो नहीं जानते थे संघर्ष में डरना

(ऐसे चंद व्यक्ति हुए हैं जिन्हें दुनिया याद करती है। लेनिन ऐसी ही एक महान विश्व हस्ती थे। महान नवम्बर क्रान्ति के ही शिल्पी लेनिन केवल रूस के नहीं, बल्कि दुनिया के शोषित लोगों और सर्वहाराओं के भी नेता, शिक्षक व पथप्रदर्शक थे। समाजवाद का वास्तविक रूप क्या है, कैसे केन्द्रीकृत, योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था परिचालित होती है, कैसे जातिगत विद्वेष और बैरभाव दूर करके एकमात्र समाजवाद में ही बहुराष्ट्रीयताओं वाले लोगों को भाईचारे के बन्धन में बांधा जा सकता है यह कॉमरेड लेनिन और उनके सुयोग्य छात्र कॉमरेड स्तालिन ने हमें दिखाया। लेनिन ने परिवर्तित विश्व परिस्थिति में मार्क्सवाद को नये रूप में विकसित, उन्नत व समृद्ध किया। आज के जमाने का मार्क्सवाद है लेनिनवाद। महान लेनिन की मृत्यु के बाद 28 जनवरी, 1924 को क्रेमलिन मिलिट्री स्कूल द्वारा आयोजित एक स्मृति सभा में कॉमरेड स्तालिन द्वारा दिए गए भाषण को हम नवम्बर क्रान्ति शताब्दी वर्ष मनाने के हिस्से के रूप में यहाँ उनकी याद में प्रकाशित कर रहे हैं –सम्पादक स.दृ.)

लेनिन

(स्तालिन का भाषण)

कॉमरेड्स,

मैंने सुना है कि आपने यहाँ इस शाम लेनिन स्मृति सभा का आयोजन किया है और मुझे उसमें एक वक्ता के रूप में बुलाया गया है। मुझे नहीं लगता कि लेनिन की गतिविधियों पर एक परम्परागत भाषण देने की मुझे आवश्यकता है। मैं समझता हूँ यह अच्छा रहेगा कि एक मनुष्य और एक नेता के रूप में लेनिन के कुछ चारित्रिक गुणों को उजागर करने के लिए कुछ तथ्यों तक ही मैं खुद को सीमित रखूँ। हो सकता है उन तथ्यों के बीच कोई योगसूत्र न हो लेकिन जहाँ तक लेनिन के बारे में एक आम समझ हासिल करने का सवाल है यह योगसूत्र रहना कोई बहुत महत्वपूर्ण बात नहीं है। किसी भी हालत में इस अवसर पर मैं उससे ज्यादा कुछ करने में असमर्थ हूँ जिसका अभी-अभी मैंने वायदा किया है।

पहाड़ी बाज़

लेनिन से मेरा पहला परिचय 1903 में हुआ था। सच है कि यह आमने-सामने व्यक्तिगत परिचय नहीं था बल्कि पत्राचार के माध्यम से था। लेकिन इसने मुझ पर ऐसी अमिट छाप छोड़ी जो मेरे तमाम पार्टी जीवन में मेरे तमाम काम के दौरान कभी मुझ से दूर नहीं हो सकी। उस समय मैं साईबेरिया में निर्वासित था। 1890 के दशक के अंत और विशेषकर 1901 के बाद, 'इस्क्रा' (क्रान्तिकारी अखबार 'चिंगारी') के प्रकाशन के पश्चात से लेनिन की क्रान्तिकारी गतिविधियों के बारे में मेरी जानकारी ने मुझे आश्वस्त कर दिया था कि लेनिन के रूप में एक असाधारण क्षमतासम्पन्न आदमी हमें मिल गया है। उस समय मैं उनको पार्टी का सिर्फ एक नेता ही नहीं मानता था बल्कि इसका असल संस्थापक मानता था, क्योंकि सिर्फ उन्होंने ही हमारी पार्टी के अन्दरूनी सारतत्व और महत्त्वपूर्ण जरूरतों को समझा था। जब मैंने उनकी तुलना हमारी पार्टी के अन्य नेताओं से की तो मुझे हमेशा लगा कि अपने साथियों–प्लेखानोव, मार्तोव, एक्सलरोड और अन्यों से उनका व्यक्तित्व बहुत ऊपर था; कि उनके मुकाबले में लेनिन नेताओं में से सिर्फ एक नेता नहीं थे बल्कि सर्वोच्च नेता थे। एक पहाड़ी बाज जैसे थे, जो संघर्ष में डरना नहीं जानता था और जिन्होंने रूसी क्रान्तिकारी आन्दोलन के अनजाने रास्तों पर अडिग दृढ़ता से आगे बढ़ने के लिए साहसपूर्वक पार्टी का नेतृत्व किया। इस प्रभाव ने मुझे इतना गहरा जकड़ लिया था कि उसके बारे में अपने एक मित्र को लिखने के लिए मैंने एक आंतरिक आवेग महसूस किया। मेरा वह मित्र राजनैतिक निर्वासित होकर विदेश में रह रहा था। मैंने उससे अपना विचार मुझे बताने का आग्रह किया था। कुछ समय बाद 1903 के अन्त में जब मैं पहले से ही साईबेरिया में निर्वासित था– तब मुझे अपने मित्र से एक उत्साहपूर्ण उत्तर मिला और उसके साथ ही एक साधारण लेकिन बहुत ही सारगर्भित टिप्पणी लेनिन की ओर से प्राप्त हुई, जिससे समझ सकता हूं कि मेरे दोस्त ने मेरा वह पत्र उन्हें दिखा दिया था। लेनिन की

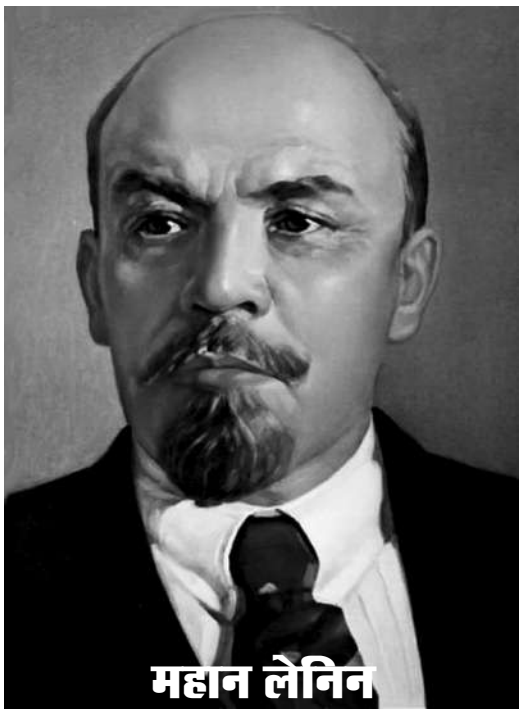
महान लेनिन

टिप्पणी तुलनात्मक रूप से संक्षिप्त थी लेकिन इसमें हमारी पार्टी के प्रैक्टिकल काम की साहसिक और निडर आलोचना दर्ज थी। साथ ही पार्टी के भावी काम की पूरी योजना का बहुत ही स्पष्ट तथा संक्षिप्त ब्यौरा था। सिर्फ लेनिन ही अति जटिल चीजों को इतने साधारण और स्पष्ट तरीके से, इतने संक्षिप्त और दमदार तरीके से लिख सकते थे कि प्रत्येक वाक्य मानो बन्दूक की गोली की तरह सटीक होता था। इस सामान्य और दमदार पत्र ने मेरे विचार को और भी पुष्ट कर दिया था कि लेनिन हमारी पार्टी के पहाड़ी बाज थे। मैं खुद को इस बात के लिए कभी माफ नहीं कर सकता कि एक पुराने भूमिगत कार्यकर्ता की आदत के चलते अन्य पत्रों की तरह ही लेनिन के उस पत्र को भी मैंने आग के हवाले कर दिया था। उस समय से ही लेनिन से मेरा परिचय था।

विनम्रता

मैं लेनिन से पहली बार दिसम्बर 1905 में फिनलैण्ड के टैमरफोर्स में बोलशेविक कांफ्रेंस के दौरान मिला था। मैं हमारी पार्टी के पहाड़ी बाज, महान व्यक्ति को देखने की उम्मीद कर रहा था। यह उम्मीद न केवल राजनैतिक तौर से बल्कि शारीरिक तौर से भी महान व्यक्ति को देखने की थी क्योंकि मैंने अपनी कल्पना में लेनिन को एक लम्बे-तगड़े डीलडौल वाले आदमी के रूप में चित्रित किया था जो गौरवपूर्ण और प्रभावशाली होंगे। एक अति सामान्य से दिखने वाले व्यक्ति को देख कर उस समय मुझे बहुत निराशा हुई थी, जिसका कद औसत से कम था, जो किसी भी तरह से, सचमुच ही किसी भी तरह से आम आदमियों से बिलकुल भी अलग नहीं था। ...

एक 'महान व्यक्ति' के लिए इस बात की सामान्य स्वीकृति है कि वह मीटिंग में देर से आए ताकि सभा में शामिल लोग उनके आने का सांस रोके इंतजार करते रहें और फिर 'महान आदमी' के प्रवेश करने से ठीक पहले चेतावनी भरी फुसफुसाहट उभरती है – 'चुप! ... शांत! ... वह आ रहा है।' यह अनुष्ठान मुझे गैर-वाजिब नहीं लगता था क्योंकि यह उस आदमी के बारे में एक भावमूर्ति तैयार करता है, श्रद्धा-सम्मान पैदा करता है। तब मुझे यह जान कर निराशा हुई कि लेनिन कांफ्रेंस में डेलिगेटों से पहले ही पहुँच गए थे, हाल के एक कोने में कहीं जगह देख कर बैठ गए थे और कांफ्रेंस में आए अति सामान्य डेलिगेटों के साथ निसंकोच होकर बातचीत करने में लगे हुए थे, एक बहुत ही सामान्य सी बातचीत में। मैं आपसे इस बात को नहीं छिपाऊंगा कि उस समय मुझे ऐसा लगा था कि कुछ जरूरी नियमों का उल्लंघन हो रहा है।

केवल बाद में ही मैं समझ सका कि यह सादगी और विनम्रता, खुद को औरों की नजरों से ओझल रखने की यह चेष्टा या यूं कहिए कि कम से कम खुद को सामने न लाने का प्रयास और अपने ऊँचे ओहदे का दिखावा न करना – यही खासियत थी मानवजाति के निचले तबके के, 'जनसाधारण' के, नई जनता के नये नेता के रूप में लेनिन के चरित्र का सबसे मजबूत पहलू।

तर्क की शक्ति

उस कांफ्रेंस में लेनिन द्वारा दो उल्लेखनीय भाषण दिये गए थे। एक था वर्तमान परिस्थिति पर और दूसरा था कृषि-सम्बन्धी सवाल पर। दुर्भाग्यवश उन्हें सम्भाल कर नहीं रखा गया। उन भाषणों ने पूरी कांफ्रेंस को प्रेरित किया और तूफानी जोश की पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया था। दृढ़ विश्वास की असाधारण शक्ति, तर्क की सरलता और स्पष्टता, सहज समझ आने वाले छोटे-छोटे वाक्य, ढोंग रहित सहज प्रस्तुति, कृत्रिमता और नाटकीय भाव-भंगिमा की अनुपस्थिति –इन सभी खासियतों ने सामान्य 'संसदीय' वक्ताओं के रस्म अदायगी नुमा भाषणों की तुलना में लेनिन के भाषणों को लोकप्रिय बना दिया था। लेकिन उस समय जिसने मुझे सम्मोहित किया था वह लेनिन के भाषणों का यह पहलू नहीं था। मैं उनके तर्क की उस अकाट्य शक्ति से सम्मोहित हुआ था। हालांकि उनके भाषण अत्यंत नपे-तुले होते थे, पर अपने श्रोताओं के मन पर गहरी पकड़ बना लेते थे, धीरे-धीरे उन्हें जोरदार ढंग से प्रेरित कर देते थे और फिर जैसा कि कोई कह सकता है उन्हें पूरी तरह अपनी गिरफ्त में ले लेते थे। मुझे याद है कि बहुत से डेलिगेटों ने कहा था, ''लेनिन के भाषणों के तर्क एक सशक्त बाहुपाश की तरह हैं जो आपके चारों ओर लिपट जाता है और आपको शिकंजे की तरह जकड़ लेता है और अंततः जिसकी पकड़ से खुद को बाहर निकालने में आप शक्तिहीन होते जाते हैं या फिर आप आत्मसमर्पण कर देंगे या खुद को घोर पराजय के हवाले कर देंगे।''

मैं समझता हूँ कि लेनिन के भाषणों की यह चारित्रिक विशेषता एक वक्ता के रूप में उनकी कला का जबरदस्त पहलू था।

हार का न कोई डर और न कोई रोना-धोना

दूसरी बार लेनिन से मैं 1906 में हमारी पार्टी की स्टॉकहोम कांग्रेस के दौरान मिला था। आप जानते हैं कि उस कांग्रेस में बोलशेविक अल्पमत में थे और पराजित हुए थे। लेनिन को पराजित की भूमिका में देखने का यह मेरा पहला मौका था। लेकिन वे उन नेताओं की तरह बिलकुल नहीं थे जो पराजय के बाद रोना-धोना शुरू कर देते हैं और हताश हो जाते हैं। इसके विपरीत, पराजय लेनिन को संचित उर्जा के एक फव्वारे में तब्दील कर देती थी, जो उनके समर्थकों को नई लड़ाइयां लड़ने के लिए और भविष्य में जीत हासिल करने के लिए प्रेरणा देती थी। मैंने कुछ देर पहले ही बताया था कि उस कांग्रेस में लेनिन पराजित हुए थे। लेकिन किस तरह की पराजय थी यह? आप यह उनके विरोधियों, स्टॉकहोम कांग्रेस के विजेताओं–प्लेखानोव, एक्सलरोड, मार्तोव और अन्यों के चेहरे देखते ही समझ सकते थे। उनके चेहरे उतरे हुए थे। उनमें आपको विजेताओं का कोई भी भाव नजर नहीं आता था, क्योंकि यूं कहा जा सकता है कि लेनिन द्वारा की गई मेनशेविज़्म की बेरहम आलोचना ने उनके शरीर में कोई हड्डी-पसली साबुत नहीं छोड़ी थी। मुझे याद है कि हम बोलशेविक डेलिगेट एक ग्रुप में एक साथ मिलकर बैठे थे और लेनिन की तरफ ताक रहे थे उनकी सलाह-हिदायत पाने के लिए। कुछ डेलिगेटों के भाषणों में थकावट और निराशा का भाव झलक रहा था। मुझे याद है कि लेनिन ने इन भाषणों का उत्तर दांत पीसते हुए बड़े कड़े शब्दों में दिया, ''कॉमरेड्स रोना-धोना बंद करो, हम जीतेंगे जरूर क्योंकि हम सही हैं।'' रोना-धोना करने वाले बुद्धिजीवियों से नफरत करो, अपनी खुद की ताकत पर भरोसा रखो, जीत पर यकीन रखो–यही था जो लेनिन ने हमें समझाया था। यह महसूस किया गया कि बोलशेविकों की हार अस्थाई है, कि अति निकट भविष्य में हम अवश्य ही विजयी होंगे।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

क्रान्तिकारी जन उभारों की सृजनात्मक शक्ति और क्रान्तिकारी नेतृत्व की कला में माहिर थे लेनिन

(पृष्ठ 3 का शेष)

''पराजय पर रोना-धोना नहीं''–यह था लेनिन की गतिविधियों का पहलू जिसने अंत तक वफादार और अपनी ताकत पर भरोसा रखने वाली एक सेना अपने इर्द-गिर्द खड़ी करने में उनकी मदद की थी।

अपनी शेखी न बघारना

1907 में लंदन में हुई अगली कांग्रेस में बोलशेविकों ने जीत हासिल की थी। विजेता की भूमिका में लेनिन को देखने का यह मेरा पहला मौका था। विजय कुछ नेताओं के सर चढ़ कर बोलने लगती है और उन्हें अहंकारी तथा बड़बोला बना देती है। अधिकतर मामलों में वे विजेता के रूप में पेश आने लगते हैं और अपनी पुरानी उपलब्धियों से ही संतुष्ट रहने लगते हैं। लेकिन ऐसे नेताओं से लेनिन की सोच का जरा सा भी मेल नहीं था। इसके विपरीत किसी विजय के तुरन्त बाद ही वे विशेषतौर पर अधिक सजग और सावधान हो जाते थे। मुझे याद है कि लेनिन ने डेलिगेटों से जोर देकर कहा था, ''पहली बात याद रखें, जीत से मदमस्त नहीं होना है और न ही डींगे हांकनी हैं; दूसरी बात अपनी जीत को सुदृढ़ करना है, तीसरी बात दुश्मन को अंतिम धक्का और देना है। क्योंकि वह पराजित हुआ है लेकिन पूरी तरह नेस्तोनाबूद नहीं हुआ है।'' उन्होंने उन डेलिगेटों की तीव्र भर्त्सना की जो बहुत ही गैर जिम्मेदाराना ढंग से कह रहे थे कि ''अब मेंशेविकों का काम तमाम हो गया है।'' उन्हें यह दर्शाने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि मजदूर वर्ग के आन्दोलन में मेंशेविकों की जड़ें अभी भी हैं, बड़ी दक्षता के साथ उनका मुकाबला करना है और यह कि अपनी खुद की ताकत को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर आंकने और दूसरों विशेषकर दुश्मन की ताकत को बहुत कम करके आंकने से बचना होगा। ''जीत में शेखी नहीं बघारना'– यह थी लेनिन की चारित्रिक विशेषता जिसने ठण्डे दिमाग से सोचकर दुश्मन की ताकत का अंदाजा लगाने और संभावित मुसीबतों से निपटने के लिए पार्टी को पहले से ही तैयार रखने में लेनिन की मदद की।

सिद्धान्त के प्रति अडिग निष्ठा

पार्टी नेताओं को अपनी पार्टी के बहुमत के विचार को महत्त्व देना ही होता है। बहुमत वह शक्ति है जिसे हर नेता को मानना पड़ता है। लेनिन इस बात को किसी दूसरे पार्टी नेता से कम नहीं समझते थे। लेकिन लेनिन कभी बहुमत के बंधक नहीं बने, विशेषकर तब जब बहुमत के पास सिद्धांत का आधार नहीं हो। हमारी पार्टी के इतिहास में ऐसे भी क्षण आए हैं जब बहुमत का विचार या पार्टी के तात्कालिक स्वार्थ का सर्वहारा के मूलभूत स्वार्थ के साथ टकराव हो गया था। ऐसे मौकों पर लेनिन कभी हिचकते नहीं थे और सिद्धांत के समर्थन में पार्टी के बहुमत के खिलाफ दृढ़तापूर्वक अपना स्टैण्ड लेते थे। इससे भी बढ़कर ऐसे अवसरों पर वे सभी के विरोध में वस्तुत: अकेला खड़े रहने में भी डरे नहीं – क्योंकि वे यह मानते थे और अक्सर कहा करते थे कि ''सिद्धांत पर आधारित नीति ही सही नीति है।''

इस प्रसंग में निम्नलिखित दो तथ्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

पहला तथ्य : यह 1909-11 के दौरान की बात है जब प्रतिक्रान्ति द्वारा पार्टी पर जबरदस्त प्रहार हुआ था और पार्टी पूरी तरह बिखराव की प्रक्रिया में थी। यह दौर पार्टी में अविश्वास का, पार्टी से भारी संख्या में पलायन का दौर था। न केवल बुद्धिजीवी बल्कि कुछ हद तक मजदूर भी पार्टी को छोड़ कर जा रहे थे; एक ऐसा दौर था जब गैर कानूनी संगठन की जरूरत को नकारा जा रहा था। वह था पार्टी के विलोप और पूरी तरह टूटने का एक दौर। केवल मेंशेविकों में ही नहीं बल्कि तब बोलशेविकों में भी बहुत से गुट और रुझान पैदा हो गए थे, इनमें ज्यादातर ने मजदूर वर्गीय आन्दोलन से नाता तोड़ लिया था। आप जानते हैं कि यह वही दौर था जब गैर कानूनी संगठन को पूरी तरह समाप्त कर देने का विचार उभर आया था और मजदूरों को कानूनी उदारवादी स्तोलिपिन पार्टी जैसी एक पार्टी में संगठित करने का विचार आया था। यह धारणा महामारी की तरफ व्यापक पैमाने पर फैल गई थी। उस समय केवल लेनिन ही ऐसे नेता थे जो इस चौतरफा महामारी का शिकार नहीं हुए थे। वही एक नेता थे जिन्होंने पार्टी सिद्धान्त के झण्डे को बुलन्द रखा। विस्मयकारी धैर्य और असाधारण जीवट के साथ मजदूर वर्गीय आन्दोलन के अन्दर पार्टी-विरोधी हरेक रुझान का मुकाबला करते हुए पार्टी की बिखरी पड़ी और टूटी हुई ताकतों को इकट्ठा किया था और असाधारण साहस और अद्वितीय दृढ़ता के साथ पार्टी सिद्धांत की रक्षा की थी।

हम जानते हैं कि पार्टी सिद्धांत की रक्षा करने के इस संघर्ष में लेनिन ही बाद में विजयी सिद्ध हुए।

दूसरा तथ्य : यह 1914-17 का दौर था जब साम्राज्यवादी युद्ध पूरे उफान पर था और जब सभी या यूं कहिए लगभग सभी सोशल डैमोक्रेटिक और सोशलिस्ट पार्टियाँ व्यापक देश भक्ति उन्माद का शिकार हो गई थी और अपने-अपने देशों के साम्राज्यवादियों की सेवा में खुद को समर्पित कर दिया था। यह वह दौर था जब द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय ने पूँजीवाद के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था, जब प्लेखानोव, काऊत्स्की, गैस्डे जैसे और अन्य लोग भी अंधराष्ट्रवाद की आंधी में बह गये थे। उस समय लेनिन सिर्फ अकेले या यूं कहिए लगभग अकेले ही थे जिन्होंने सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद और तथाकथित 'शान्ति शान्ति' का राग अलापने की सामाजिक-शान्तिवादिता के खिलाफ दृढ़ संकल्पित संघर्ष छेड़ा था, गैस्डेयों और काऊत्स्कियों के विश्वासघात को पुरजोर धिक्कारा था और जिन सब ''क्रान्तिकारियों'' के बीच में पस्त हिम्मती घर कर गई थी, उनको बेनकाब कर दिया था। लेनिन जानते थे कि उनका समर्थन सिर्फ नगण्य अल्पमत कर रहा है, लेकिन उनके लिए यह प्रधान विचारणीय विषय ही नहीं था क्योंकि वे जानते थे कि केवल सही नीति, जिसका कोई भविष्य था, वह थी सुसंगत अंतर्राष्ट्रीयवाद की नीति यानी सिद्धांत पर आधारित नीति ही केवल सही नीति है।

हम जानते हैं कि एक नए अंतर्राष्ट्रीय निर्मित करने के इस संघर्ष में भी लेनिन विजयी सिद्ध हुए थे।

''सिद्धांत पर आधारित एक नीति ही केवल सही नीति है।''– संघर्ष का यह वह फार्मूला था जिसके आधार पर लेनिन ने नई ''अपराजेय'' स्थितियाँ हासिल की और सर्वहारा वर्ग के बेहतरीन तत्वों को क्रान्तिकारी मार्क्सवाद की तरफ ले आए।

जनता पर विश्वास

सिद्धांतकार और विभिन्न पार्टियों के नेतागण जो राष्ट्रों के इतिहास से वाकिफ हैं और जिन्होंने क्रान्तियों के इतिहास का शुरू से अंत तक अध्ययन किया है, वे भी कभी-कभी एक शर्मनाक बीमारी से ग्रसित हो जाते हैं। इस बीमारी को कहा जाता है जनता से डर लगना, जनता की रचनात्मक ताकत के प्रति अविश्वास होना। इस बीमारी से कभी-कभी ऐसे नेताओं में खुद को जनता से ऊंचा समझने जैसा अभिजात वर्ग सुलभ नजरिया पैदा हो जाता है। हालांकि वे क्रान्तियों के इतिहास से वाकिफ नहीं होते हैं कि क्रान्तियाँ पुराने को ध्वस्त और नए का निर्माण किया करती हैं। इतिहास द्वारा यह जिम्मेदारी इस जनता को ही सौंपी गई है। यह अभिजात वर्ग सुलभ नजरिया इस डर की वजह से पैदा होता कि जनता कहीं बेकाबू न हो जाए, ऐसा न हो कि कहीं जनता ''बहुत ज्यादा तबाह कर दे'' इसकी वजह होती है एक उपदेशक की भूमिका निभाने की इच्छा जो जनता को किताबों से सिखाने का प्रयास करता है लेकिन जो जनता से सीखने का मन नहीं रखता है।

लेनिन ऐसे नेताओं से बिलकुल ही उलट थे। मैं ऐसे किसी अन्य क्रान्तिकारी को नहीं जानता हूँ जो लेनिन की तरह सर्वहारा वर्ग की रचनात्मक शक्ति में और इसकी वर्ग प्रवृत्ति की क्रान्तिकारी कार्यकारिता में इतना गहरा विश्वास रखता हो। ''क्रान्ति की अराजकता'' और ''जनता द्वारा दंगे की अवैध कार्रवाइयां'' कह कर जो सब आत्मसंतुष्ट आलोचक जनता की आलोचना में मुखर होते थे उनकी लेनिन जिस तरह बेरहमी से जम कर खबर लेते थे, उस तरह कोई अन्य क्रान्तिकारी कर सकता था मैं नहीं जानता। मुझे याद है कि जब एक वार्तालाप के दौरान एक कॉमरेड ने कहा कि ''क्रान्ति के तुरंत बाद ही सामान्य कानून-व्यवस्था कायम हो जानी चाहिए।'' लेनिन ने कटाक्षपूर्वक कहा था कि, ''यह बड़े अफसोस की बात है कि जो लोग क्रान्तिकारी बनना चाहते हैं वे यह भूल जाते हैं कि क्रान्तिकारी परिस्थिति ही है इतिहास में सामान्य कानून-व्यवस्था की सबसे आदर्श परिस्थिति।''

इसलिए जो अवज्ञापूर्वक जनता को हेय दृष्टि से देखते थे और उन्हें किताबों से सिखाने का प्रयास करते थे उन सभी के प्रति लेनिन इतनी अश्रद्धा रखते थे। इसीलिए लेनिन ने निरन्तर यह सीख दी थी कि जनता से सीखो, उनकी कार्रवाइयों को समझने का प्रयास करो, जनता के व्यवहारिक तजुर्बे का बारीकी से अध्ययन करो। जनता की रचनात्मक शक्ति में विश्वास–यह लेनिन की गतिविधियों की विशेषता थी जिसने उन्हें जनता की आशा-आकांक्षा को समझने, स्वत:स्फूर्त प्रक्रिया को समझने और इसके आन्दोलन को सर्वहारा क्रान्ति की दिशा में संचालित करने में उन्हें सक्षम बनाया।

क्रान्ति की प्रतिभा

लेनिन का जन्म क्रान्ति के लिए ही हुआ था। वास्तव में ही वे क्रान्तिकारी उभारों की सृजनात्मक शक्ति और क्रान्तिकारी नेतृत्व की कला के सबसे बड़े उस्ताद थे। कभी भी वे इतना चिन्तामुक्त और आनंदित महसूस नहीं करते थे जितना क्रान्तिकारी उथल पुथल के दौरान महसूस करते थे। इससे मेरा आशय यह नहीं है कि लेनिन सभी क्रान्तिकारी उथलपुथल का समान रूप से अनुमोदन करते थे या यह कि वे हर समय और सभी हालात में क्रान्तिकारी उभारों के पक्षधर थे। ऐसा कतई नहीं था। मेरा आशय यह है कि लेनिन की अंतर्दृष्टि की प्रतिभा की झलक कभी भी इतनी पूर्णता और स्पष्टता से नहीं देखी गई जितनी कि क्रान्तिकारी उभारों के दौरान देखी गई। क्रान्ति के दौरान वे वस्तुत: खिल उठते थे, एक भविष्यदृष्टा बन जाते थे, वर्गों की गति-प्रकृति और क्रान्ति की संभावित टेढ़ी मेढ़ी चालों को भांप लेते थे। उन्हें ऐसे देख लेते थे मानो वे उनके हाथ की हथेली पर रखी हों। यह बात भी तर्क आधारित थी कि हमारे पार्टी दायरों में कहा जाता था कि ''क्रान्ति के प्रवाह में लेनिन ऐसे तैरते हैं जैसे पानी में मछली।''

अत: लेनिन के रणकौशलगत नारों की इतनी ''गजब की'' स्पष्टता और उनकी क्रान्तिकारी योजनाओं की ''विस्मयकारी'' साहसिकता थी।

मुझे दो तथ्य याद आते हैं जो लेनिन के इस पहलू की खास विशेषता हैं।

पहला तथ्य : यह अक्टूबर क्रान्ति के ठीक पहले का दौर था जब देश के भीतर और सीमा पर युद्ध के द्वारा पैदा किये गए संकट से ग्रस्त लाखों लाख मजदूर, किसान और सैनिक शान्ति और आजादी की मांग कर रहे थे; जब सेनापति और पूँजीपति ''आर-पार के युद्ध'' की वजह से सैनिक तानाशाही के लिए काम कर रहे थे; जब पूरा का पूरा तथाकथित ''जनमत'' और तमाम तथाकथित ''सोशलिस्ट पार्टियाँ'' बोलशेविकों के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया अपना रही थी और ''जर्मन जासूस'' करार देकर उन्हें बदनाम कर रही थी; जब बोलशेविक पार्टी को भूमिगत कर देने के लिए केरेंस्की प्रयास कर रहा था–कुछ हद तक सफल भी हो चुका था और जब आस्ट्रो-जर्मन गठजोड़ की शक्तिशाली और अनुशासित सेनाएं अभी तक हमारी थकी-हारी, बिखर रही सेनाओं से टक्कर ले रही थी, जब पश्चिमी यूरोप के 'सोशलिस्ट' 'युद्ध में विजय के लिए' अपनी-अपनी सरकारों के साथ आनंदमय सांठगांठ में रह रहे थे ... ऐसे एक समय में क्रान्ति शुरू कर देने का मायना क्या था? ऐसी एक स्थिति में क्रान्ति शुरू कर देने का मतलब था सब कुछ दांव पर लगा देना। लेकिन लेनिन जोखिम लेने में डरे

(शेष पृष्ठ 8 पर)

देश भर में मनायी गई नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की 120वीं जयंती

सूरत (गुजरात) : ऑल इण्डिया डी.वाई.ओ. द्वारा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की 120वीं जयंती के अवसर पर रैली और सभा आयोजित की गई। रैली उधना रेलवे स्टेशन, अक्षर शोपिंग सेंटर से रेलवे गरनाला होते हुए नवागाम साग मार्किट होकर सभा स्थल डिंडोली रेलवे फाटक तक पहुँच कर सभा में परिवर्तित हो गई।

सभा के मुख्य वक्ता कॉ. जयेश पटेल (सेक्रेटरी एआईडीवाईओ गुजरात राज्य) ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन तथा उनके आजादी आन्दोलन के संघर्ष को याद किया। उन्होंने नेताजी के जीवन से सीख लेकर आगे बढ़ने की लोगों से अपील की। वक्ता कॉ. प्रो. कनुभाई खड़दिया (प्रमुख एआईडीवाईओ, गुजरात राज्य), कॉ. सत्येन्द्र सिंह (उपप्रमुख एआईडीवाईओ, गुजरात राज्य) ने भी सभा को सम्बोधित किया। उत्तर प्रदेश सें आये कॉ. रविशंकर मौर्य (प्रमुख एआईडीवाईओ, उत्तर प्रदेश) ने नकली राष्ट्रभक्ति-देशभक्ति को लेकर अपनी बात रखी। सूरत डी.वाई.ओ. की तरफ से कन्हैयाभाई, रमाकान्त वर्मा, ललित सोलंकी, प्रीतम, सुरेशचन्द्र मौर्य ने भी बात रखी। सभा का संचालन कॉ. प्रयागराज मौर्य(सेक्रेटरी एआईडीवाईओ, सूरत जिला)ने किया। भीखाभाई प्रजापति (प्रमुख एआईडीवाईओ, सूरत जिला) ने आभार व्यक्त किया।

ग्वालियर (म.प्र.) : आजादी आन्दोलन की गैर समझौतावादी धारा के महान क्रान्तिकारी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती के अवसर पर ग्वालियर शहर के विभिन्न स्कूल कॉलेजों के साथ-साथ मुख्य चौराहों पर ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. द्वारा पुष्पांजलि कार्यक्रम लिए गये। इसके अंतर्गत पद्या विद्यालय, जिवाजीराव कन्या विद्यालय, मुरार नंबर एक व नंबर दो स्कूल साथ ही साथ वी आर जी कालेज मुरार, एमएलबी कालेज, के आर जी कालेज, बारादरी चौराहा पर कार्यक्रम आयोजित किए गये। इन कार्यक्रमों की कड़ी में प्रगतिशील साहित्य व नेताजी के पोस्टरों की बिक्री आम छात्रों व अध्यापकों के बीच की गई जिससे क्रान्तिकारियों के विचारों को जनमानस में फैलाया जा सके। नेताजी की याद में के पी कालोनी की बाल सभा के बच्चों ने प्रभातफेरी निकाली जिसमें सभी छात्र-छात्राओं ने उत्साह के साथ बड़-चढ़कर हिस्सा लिया। **आरोन-गुना(म.प्र.) :** नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती के अवसर पर एआईडीवाईओ ने नगर में विभिन्न कार्यक्रम लेते हुए वाहन रैली निकाली जिसका नगर की जनता द्वारा जोरदार स्वागत किया गया।

जौनपुर (उ.प्र.) : नेताजी सुभाष जयंती पर 23 जंनवरी को एआईडीएसओ जौनपुर जिला कमेटी द्वारा रा. ह.सिं.पी.जी. कॉलेज सिंगराऊ, स.ब.ई. कॉलेज बदलापुर और कुशहाँ बाजार में सुभाष बोस की फोटो पर माल्यार्पण, बैज धारण व उद्धरण प्रदर्शनी आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये। रा.ह.सिं.पी.जी. कॉलेज, सिंगराऊ के भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ. आर.जे. सिंह व कई अन्य शिक्षक भी कार्यक्रम मे शामिल हुए। 24 जनवरी को श्रीमुरलीधर जू. हाई स्कूल रामपुर के प्रांगण में सभा की गई जिसकी अध्यक्षता बृजमोहन तिवारी ने की। संचालन सभाजीत पाल ने किया। सभा को कॉ. दिलीप कुमार खरवार, जौनपुर जिलाध्यक्ष व बृजेश पाल ने सम्बोधित किया। छात्र-छात्राओं ने गीत प्रस्तुत किये। 25 जनवरी को ऊदपुर गेल्हवा गांव में हुए समारोह की अध्यक्षता कॉ. सुखराम सरोज ने की। संचालन कॉ. सतीश प्रजापति ने किया। कॉ. दिनेशकांत दूबे, मिथिलेश कुमार मौर्य, दिलीप कुमार खरवार, राकेश निषाद, विनोद मौर्य, सागर मौर्य व सुरेन्द्र शर्मा ने सभा को सम्बोधित किया। अंजली व चंदा सरोज ने गीत गाये।

भिवानी (हरियाणा) : 23 जनवरी को देश के आजादी आन्दोलन की समझौताहीन धारा के सशक्त प्रतिनिधि महान् क्रान्तिकारी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की 120वीं जयन्ती के अवसर पर एआईडीवाईओ की तरफ से स्थानीय नेहरू पार्क भिवानी में जनसभा की गयी। इसकी अध्यक्षता कमल तोशाम ने की। मुख्य वक्ता एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड रामफल रहे। सभा का संचालन डी.वाई.ओ. के जिला सचिव सन्दीप मेहरा ने किया।

सभा को किसान नेता कॉ. जिले सिंह व श्रमिक नेता कॉ. धर्मवीर सिंह ने भी सम्बोधित किया। सभा में सैकड़ों युवक-युवतियां शामिल हुए।

पिलानी (राजस्थान) : 23 जनवरी को नेताजी सुभाष जयन्ती पर तीन अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किये गए। एसयूसीआई(सी) द्वारा मेन मार्किट पार्क में आयोजित की गई सभा को पार्टी के संगठक कॉ. शंकर दहिया ने सम्बोधित किया। रात को बाल्मिकी बस्ती में एआईडीवाईओ द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इनका संचालन महावीर शर्मा, विष्णु वर्मा और फणी मणि ने किया। राजपुरा, पिलानी में भी एआईडीवाईओ द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया। एक महीने भर तैयारी के बाद इस दिन शराबबंदी पर, महिलाओं के परम्परागत जीवन पर और मुंशी प्रेमचंद की कृति 'बूढ़ी काकी' पर आधारित तीन नाटक मंचित किये गये। इसके अलावा, कई क्रान्तिकारी व जनवादी गीत भी गाये गए।

फणी मणि ने मुख्य वक्तव्य रखा। कार्यक्रम को सफल बनाने में महावीर शर्मा, विष्णु वर्मा, फणी मणि, रमेश आलड़िया का काफी योगदान रहा।

जारी है नोटबंदी का विरोध

दिल्ली : नोटबंदी के चलते हुई आम लोगों की मौत, रोजगारों के खात्मे और काम-धंधे बंद होने के विरोध में 8 जनवरी को एसयूसीआई(सी) बुराड़ी इकाई द्वारा जुलूस निकाला गया। जुलूस सत्य बिहार एकता इक्लेव मुख्य द्वार से शुरू होकर तोमर कालोनी, नेहरू गली, संत नगर होते हुए लेबर चौक तक जाकर एक जनसभा में तब्दील हो गया। जुलूस में सैंकड़ों की संख्या में मजदूर रेहड़ी पटरी लगाने वाले और आम आदमी शामिल हुए। एसयूसीआई(सी) के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्राण शर्मा, बुराड़ी कमेटी के इंचार्ज कॉ मैनेजर चौरसिया ने जुलूस का नेतृत्व किया। वहीं वामदलों में सीपीआई(एम) के राज्य सचिवमंडल सदस्य कॉ. आशा शर्मा सहित अन्य कई इस जुलूस में उपस्थित थे। मांग की गई कि नोटबंदी से मारे गये मृतकों के परिवारों को मुआवजा दिया जाए, जिनका रोजगार खत्म हुआ है उन्हें रोजगार दिया जाए और स्विस बैंकों में जमा कालेधन के कुबेरों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों द्वारा संयुक्त विरोध : इंटक, एटक, सीटू, एचएमएस, एआईसीसीटीयू, टीयूसीसी, यूटीयूसी और एआईयूटीयूसी आदि केन्द्रीय श्रमिक संगठनों ने मोदी सरकार के नोटबन्दी के तुगलकी फरमान के खिलाफ 28 जनवरी को जंतर-मंतर पर संयुक्त विरोध प्रदर्शन किया। इसमें काफी श्रमिकों ने भाग लिया। वहां हुई सभा को एटक की अमरजीत कौर, एआईसीसीयूटी के संतोष राय, टीयूसीसी के धर्मेन्द्र प्रधान के अलावा एआईयूटीयूसी के सचिवमण्डल सदस्य कॉ. आर. के. शर्मा ने सम्बोधित किया। कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाते हुए कॉ शर्मा ने याद कराया कि कैसे विश्व के एक बड़े जनतंत्र के प्रधानमंत्री अपनी ही जनता से किए गये सार्वजनिक वायदे को 'जुमला' बता कर भुला देते हैं। अब तो उनकी कही बातें, 'भूत के मुँह से राम-राम' जैसी लगती हैं। नोटबन्दी का कुछ तत्कालीन प्रभाव तो अपने ही जमा सफेद धन को पाने के लिए लम्बी लाइनों में इतने दिन खड़े रहकर, अपनी जानें गवांकर, इलाज, शादी व अन्य दैनिक जरूरतों के लिए पाई-पाई के लिए तरस कर लोग अनुभव कर ही चुके हैं। इसके दूरगामी प्रभाव भी दिखाई देने लगे हैं। लाखों छोटे व मझौले कारोबार बंद हो गए हैं। इससे करोड़ों कामगारों का रोजगार छिन गया है। दिल्ली से ही लाखों मजदूरों की घर वापसी करा दी है। गरीब व मध्यम वर्गीय लोगों ने जो पैसा मुसीबत के समय के लिए बचा कर रखा हुआ था, नोटबंदी कर उसे बैंकों में डालने को मजबूर किया गया। जबकि 10 लाख करोड़ रुपये बैंकों का कर्ज पूंजीपति डकार गए। इस नोटबंदी के जरिये कैसे चालाकी से गरीब जनता की जेबों पर डाका डाला गया, बैंकों का पेट भरा गया ताकि कॉरपोरेट घरानों को फिर से सस्ती ब्याज दरों पर उधार दिया जा सके और पूँजीपति मनचाहा सर्वोच्च मुनाफा कमा सकें। इससे न तो 'काला धन' बरामद हुआ और न ही जाली नोट पकड़े गये। भ्रष्टाचार बढ़ा है और आतंकवाद पर अंकुश नहीं लगा है।

इसी कड़ी में 16 दिसम्बर को एआईयूटीयूसी की दिल्ली राज्य कमेटी ने कलावती हॉस्पिटल में एक परिचर्चा का आयोजन भी किया था, जिसमें प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार अभय दुबे और जेएनयू के इकोनॉमिक्स विभाग के प्रोफेसर प्रवीण झा ने भी शिरकत की थी। कॉ. आर. के. शर्मा ने भी परिचर्चा में भाग लिया।

ग्वालियर (म.प्र.) : 17 जनवरी को चारों वामपंथी पार्टियों ने संयुक्त रूप से फूलबाग चौराहे पर धरना दिया। सी.पी.एम, सी.पी.आई, सीपीआई (माले)और एसयूसीआई (सी) पार्टियों के कार्यकर्ता शहर के इन्दरगंज चौराहे, हजीरा चौराहे व मुरार से रैलियों के रूप में फूलबाग चौराहे पर पहॅुचे। यहॉ पर सभी धरने में शामिल हुए। धरने में सीपीएम से कॉ. जसविंदर सिंह, सीपीआई से कॉ. नरेन्द्र पाण्डे एवं एसयूसीआई (सी) के जिला सचिव कॉ. सुनील गोपाल ने अपना वक्तव्य रखा। सभा का संचालन सीपीएम के जिला सचिव कॉ. अखिलेश यादव ने किया।

इन्दौर (म.प्र.) : नोटबन्दी के विरोध में चार पार्टियों एसयूसीआई(सी), सीपीआई, सीपीएम और समाजवादी पार्टी द्वारा इन्दौर में सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें एसयूसीआई (सी) के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. लोकेश शर्मा, सीपीएम से राज्य कमेटी सदस्य यशविन्दर सिंह और सीपीआई से मोहन लिन्दे वक्ता रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) के प्रमोद नामदेव, सीपीआई से सदपाल यादव, सीपीएम से कैलास लिम्बोदिया व समाजवादी पार्टी के गोपाल कुशवाह ने की। इसमें बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल हुए। कार्यक्रम में बैंक यूनियन से आलोक खरे ने भी अपनी बात रखी। वक्ताओं ने नोटबंदी के फैसले व तानाशाही रवैये का पुरजोर विरोध किया। नोटबन्दी से आई सामाजिक कठिनाइयों को उजागर किया और उससे उत्पन्न भयंकर आर्थिक संकट की ओर ध्यान आकर्षित कराया। देश में फैल रही बेरोजगारी से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित होने पर चिंता व्यक्त की गई और भावी आन्दोलन की रूपरेखा तय की गई।

6 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly

सर्वहारा दृष्टिकोण

7 फरवरी, 2017

शिक्षा के व्यापारीकरण-निजीकरण के विरोध में

सड़कों पर उतरे छात्र

आरोन (म.प्र.) शिक्षा के व्यापारीकरण–निजीकरण के विरोध में, कक्षा 5वीं–8वीं बोर्ड खत्म करने व आठवीं तक किसी को फेल ना करने करने की नीति के खिलाफ व भगतसिंह बस्ती, मठ मौहल्ला में नये प्राथमिक विद्यालय, शहर में पुस्तकालय खोलने की मांग को लेकर ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. ने एक नगर सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें शहर व आसपास के गांवों से सैकड़ों छात्र शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरूआत में स्थानीय गायत्री मन्दिर से सदर बाजार तक एक रैली निकाली गई। रैली की भव्यता के दौरान "सबको शिक्षा–सस्ती शिक्षा", "भारत के महान मनीषियों को पाठ्यक्रम में शामिल करो" के गगनभेदी नारों से आकाश गुंजायमान हो गया।

रैली के अंत में सदर बाजार में एक छात्र सभा का आजोजन किया गया। इसमें नगर के गणमान्य शिक्षक मनोहर भदौरिया ने कहा कि " आज शिक्षा को पूरी तरह व्यापार की वस्तु में तब्दील कर दिया गया है। साथ ही पाठ्यक्रम में से शहीदों और मनीषियों के पाठ हटाये जा रहे हैं। इससे छात्र–नौजवानों में सही आदर्शबोध की कमी आ रही है। वे अश्लीलता, अपसंस्कृति नशाखोरी में डूबते जा रहे हैं। हमारी सरकारें लगातार इन्हें बढ़ावा दे रही हैं।

सभा को एसयूसीआई(सी) के नगर प्रभारी कॉ. मनीष श्रीवास्तव ने भी सम्बोधित किया। प्रतिनिधि सत्र में नगर की नई कमेटी का चयन किया गया। ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. की नई लोकल कमेटी के अध्यक्ष महेन्द्र नायक, उपाध्यक्ष –भास्कर रघुवंशी, योगेश, सोनी, रवीन्द्र नामदेव, सचिव राजकुमार कुशवाह, सहसचिव मनोज अहिरवार, देवेन्द्र, हजरत, इन्द्रजीत नामदेव और कार्यालय सचिव पवन अहिरवार को चुना गया। इस अवसर पर संगठन के जिला सचिव अजीत सिंह पवार और सोना श्रीवास्तव ने भी छात्रों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का समापन 'हम होंगे कामयाब' गीत से हुआ।

साझी शहादत साझी विरासत कार्यक्रम का समापन

अशोकनगर (म.प्र.) : 23 दिसम्बर को स्थानीय रसीला चौराहा विवेक टॉकीज के पास छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ, ऑल इण्डिया डीवाईओ व ऑल इण्डिया एमएसएस द्वारा संयुक्त रूप से भारतीय आजादी आंदोलन के काकोरी केस के क्रांतिकारी शहीदों रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां, रोशनसिंह एवं राजेन्द्र लाहिड़ी के शहादत दिवस पर सप्ताह भर चले कार्यक्रम का समापन हुआ। इसमें 'साझी सहादत–साझी विरासत', 'मंदिर–मस्जिद', 'एक हमारी और एक उनकी', 'लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती' आदि गीतों की प्रस्तुतियां दी गई। नृत्य नाटिका में समाज में व्याप्त सांप्रदायिक माहौल व महिलाओं पर बढ़ते अपराधों को दिखाया गया व काकोरी घटना पर आधारित नाटक का मंचन किया गया। आरोन से पधारे गायक मुलायम अली व रोशनकुमार लौंजीवार ने साज–बाज के साथ सामाजिक गजलों की प्रस्तुति दी, शहर के कलाकार विनोद कुमार जैन ने तबले पर संगत दी, सभी सांस्कृतिक गतिविधियों को लोगों ने बहुत सराहा।

स्मृति सभा को संबोधित करते हुए छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ के प्रदेश अध्यक्ष मुदित भटनागर ने कहा कि आज शहीदों को लोंगों की यादों से मिटाया जा रहा है। उनकी जीवनियों को पाठ्यक्रमों से हटाया जा रहा है। बहुत लोग शहीदों की याद में सिर्फ औपचारिक आयोजन करते हैं लेकिन वास्तव में शहीदों व मनीषियों को याद करना है तो उनके विचार व महान गुणों को छात्र–नौजवानों, आम लोंगों तक ले जाना होगा। काकोरी के शहीद देश की आजादी के लिये धार्मिक बंधनों से मुक्त होकर बेमिसाल दोस्ती के आदर्श बन गये। शोषण से मुक्ति का उन शहीदों का सपना पूरा नहीं हुआ।

कार्यक्रम में भगतसिंह यादगार मंच के सुरेन्द्रसिंह रघुवंशी, डीवाईओ के प्रदेश कमेटी सदस्य सिद्धांत साहू, ऑल इंडिया डीएसओ के प्रदेश सचिव सचिन जैन ,राज्य कमेटी सदस्य बबीता समर, जिला संयोजक सदस्य सावन वैरागी के अलावा शहर के अनेक गणमान्य नागरिक, कार्यक्रम में बड़ी संख्या में शामिल रहे। कार्यक्रम का संचालन ऑल इंडिया डीएसओ के देवेन्द्र बिजौरे ने किया।

महिलाओं पर अपराध की रोकथाम के लिए

पूर्ण नशाबंदी की उठी मांग

ग्वालियर : मध्य प्रदेश के गुना, ग्वालियर, भोपाल, इन्दौर, शिवपुरी, जबलपुर 6 जिलों में 16 दिसम्बर को दामिनी को याद करते हुए और महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए म.प्र. में पूर्ण शराबबंदी करने और अश्लीलता पर रोक लगाने की मांग करते हुए ऑल इण्डिया एमएसएस द्वारा विभिन्न कार्यक्रम लिए गए। इन मांगों को लेकर 29 दिसम्बर को शहर की मुख्य मार्केट में आम जन से हस्ताक्षर करवाए औरं आंदोलन में शामिल होकर इसे मजबूत बनाने की अपील की। इसी दिन हजीरा क्षेत्र में एक संकल्प सभा की गई।

सभा में क्षेत्रवासी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सभा में ऑल इण्डिया एम.एस.एस ग्वालियर की जिला सचिव श्रीमति सुचेता सक्सेना द्वारा बात रखी गई। उन्होंने महिलाओं व बच्चियों पर बलात्कार की लगातार बढ़ रही घटनाओं पर चिंता व्यक्त की। हजीरा क्षेत्र के लोकल कमेटी इंचार्ज रूपेश जैन द्वारा हजीरा बलात्कार कांड के खिलाफ रोष व्यक्त करते हुए सभी का आह्वान किया कि क्षेत्र के लोगों को एकजुट हों, एकता बनायें ताकि भविष्य में बाहर का कोई तत्व मोहल्ले में घुसने की हिम्मत न कर सके।

ऑल इण्ड्या एम.एस.एस की राज्य सचिव रचना अग्रवाल द्वारा बात रखते हुए कहा गया कि समाज के अंदर जो नैतिक–सांस्कृतिक गिरावट आ रही है। नशाखोरी और अश्लीलता असीमित रूप से परोसी जा रही है। यह कोई अलग–थलग समस्या नहीं है। यह इस पूंजीवादी व्यवस्था के साथ जुड़ी हुई है। आर्थिक मंदी के शिकार पूंजीवाद को बचाने के लिए सरकार ऐसी नीतियां ला रही है जिससे महंगाई, बेरोजगारी भयकर रूप से बढ़ रही है। आम लोग इनसे त्रस्त होकर आन्दोलन की ओर न मुड़ जाएं इसलिए इन्हें नशे और अश्लीलता में डुबो कर रखा जा रहा है। आज मानव तस्करी, नशे का सामान, अश्लील फिल्मों व तमाम अनैतिक कामों पर लाखों करोड़ों का कारोबार खड़ा हो गया है और सरकार की नीतियां प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसको शह दे रही हैं। इसके खिलाफ एकजुट होकर लड़ना ही एकमात्र रास्ता है।

ऊपर उठकर अपनी एकता व भाईचारे को मजबूत करने का संकल्प लिया।

सम्मेलन स्थल से लघु सचिवालय तक शहर में जोरदार जुलूस निकाल कर अपनी मांगों का ज्ञापन भी उपायुक्त, झज्जर की मार्फत मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार को भेजा गया। ज्ञापन में रजिस्ट्रेशन व बेनीफिट पाने की प्रक्रिया आसान करने, झज्जर में रजिस्ट्रेशन कार्यालय खोलने, बोर्ड का निचले स्तर तक ढांचा तैयार करने, पर्याप्त संख्या में स्टाफ भर्ती करने, सभी हितलाभों का भुगतान 1 महीने में करने, मजदूरी मारने वालों के खिलाफ सख्त फौजदारी कानून बनाने, चोट लगने पर पूरा इलाज व हर्जाखर्चा देने, मृत्यु होने पर परिवार को 11 लाख रुपये मुआवजा देने, ठेकेदारी प्रथा बंद करने, 5 लाख रुपये मकान बनाने का अनुदान देने, प्रत्येक केन्द्रीय ट्रेड यूनियन का प्रतिनिधि भवन निर्माण व अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड में लेने आदि मांग की गई।

भवन निर्माण कारीगर मजदूरों ने अपनी मांगों का सौंपा ज्ञापन

झज्जर (हरियाणा) : 10 जनवरी को एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन हरियाणा (रजि. नं. 1845) का दूसरा जिला स्तरीय सम्मेलन स्थानीय श्रीराम पार्क में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में झज्जर शहर व जिले के अनेक गाँवों से महिलाओं सहित सैकड़ों मजदूर–मिस्त्री जोश–खरोश के साथ शामिल हुए। सम्मेलन की अध्यक्षता विनोद कुमार जिला प्रधान ने की। संचालन जगदीश चंद्र ने किया। सम्मेलन को एआईयूटीयूसी के हरियाणा राज्य प्रधान कॉमरेड सत्यवान, एआईकेकेएमएस के प्रांतीय सचिव कॉमरेड जयकरण, यूनियन के प्रांतीय प्रधान कॉमरेड रामफल, जिला सचिव संजय दुबलधन व आजाद बेरी व अन्य नेताओं ने सम्बोधित किया। श्रमिक नेताओं ने यूनियन को मजबूत बनाने, मजदूरों को संगठित करने और अपने हितों के प्रति सजग करने का आह्वान किया।

सम्मेलन में भवन निर्माण कर्मियों ने नोटबंदी से चिनाई का काम मंदा पड़ने पर रोष प्रकट किया। श्रमिकों की ज्वलंत मांगों पर विचार किया गया और भावी आन्दोलन की रूपरेखा तैयार की गई। सांगठनिक कमेटी का प्रस्ताव जगदीश चंद्र ने पेश किया जिसका समर्थन आजाद बेरी ने किया। भवन निर्माण कर्मियों की ज्वलंत मांगों को लेकर आगामी दिनों में जिला के हर गाँव व कस्बे में जनजागरण अभियान चलाने, मजदूरों को हितलाभ प्राप्त करने में मार्गदर्शन व मदद करने, यूनियन की सदस्यता भर्ती करने और आन्दोलन गठित करने के संकल्प के साथ सर्वसम्मति से नई 15 सदस्यीय जिला कमेटी चुनी गई। यूनियन के जिला प्रधान विनोद कुमार बेरी, जिला सचिव संजय दुबलधन, सहसचिव आजाद बेरी, उपप्रधान जयकिशन बाघपुर, कोषाध्यक्ष मोहन बेरी चुने गये। सभी मजदूर–मिस्त्रियों ने जातपात व साम्प्रदायिकता से

शिक्षा, संस्कृति, मानवता को बचाने के लिए जिला छात्र सम्मेलन सम्पन्न

अशोकनगर (म.प्र.) : फीस वृद्धि, शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण, कक्षा 1 से 8 तक बेरोकटोक पास करने की नीति, सेमेस्टर प्रणाली, सीबीसीएस व जिले में व्याप्त शिक्षा समस्याओं के खिलाफ ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. का प्रथम जिला छात्र सम्मेलन स्थानीय नेताजी सुभाषचंद्र बोस मंच माधव भवन में संपन्न हुआ। सम्मेलन में भगतसिंह यादगार मंच के वरिष्ठ सदस्य व कवि श्री सुरेन्द्र रघुवंशी ने विचार प्रदर्शनी का अनावरण किया।

सम्मेलन की शुरूआत नेताजी सुभाषचंद्र बोस को समर्पित गीत 'शेर-ए-हिन्द तुझे सलाम' से की गई। सम्मेलन में रिटायर्ड प्रो. एस.एन.सक्सेना ने कहा कि सरकारें शिक्षा को शासक वर्ग के हितों के अनुरूप ढाल रहीं हैं। शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण को बढ़ावा दे रहीं हैं ताकि देशी-विदेशी कारपोरेट घराने शिक्षा में निवेश कर व शिक्षा को व्यापार बनाकर मुनाफा कमा सकें।

सम्मेलन के मुख्य वक्ता ऑल इण्डिया डीएसओ के राष्ट्रीय महासचिव कॉ. अशोक मिश्रा ने बताया कि छात्रों को बिना किसी भेदभाव के उच्चतम शिक्षा उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी सरकार की होती है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में कहा गया था कि अगर बच्चा स्कूल नहीं जायेगा तो स्कूल बच्चे के पास आयेगा, यानि नये स्कूलों को खोला जायेगा। लेकिन आज सरकार सरकारी स्कूलों को बंद कर रही है। छात्रों को शिक्षा पाने के उनके मौलिक अधिकार से वंचित कर रही है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का व्यापारीकरण लगातार बढ़ रहा है। शिक्षा का मकसद कुशल कारीगर बनाना नहीं बल्कि इन्सान बनाना होता है। लेकिन आज शिक्षा के व्यापारीकरण के चलते सही इंसान नहीं बन पा रहे हैं। प्रदेश अध्यक्ष कॉ. मुदित भटनागर ने सेमेस्टर प्रणाली वापिस लेने की मांग की।

सम्मेलन में नई जिला कमेटी चुनी गई जिसमें जिला अध्यक्ष सावन वैरागी, जिला सचिव देवेन्द्र विजौरे, उपाध्यक्ष श्याम शाक्य, नंदनी वैरागी व तीन सदस्यीय सचिव मंडल में राखी, अनुराग सागर, नीरज सोनी को चुना गया 14 सदस्यीय कार्यकारिणी व 30 सदस्यीय जिला परिषद का गठन किया गया। नृत्य नाटिका व नाटक का मंचन भी किया गया।

निर्भया काण्ड की बरसी पर श्रद्धांजली सभा

भोपाल (म.प्र.) : ऑल इंडिया महिला सांस्कृतिक संगठन, ऑल इंडिया डी.वाई.ओ., ऑल इंडिया डी.एस.ओ. की ओर से 16 दिसम्बर को न्यू मार्किट में 'निर्भया' 'दामिनी' के प्रति श्रद्धांजली देते हुए सभा की गई। सभा में अपनी बात रखते हुए ऑल इंडिया एम.एस.एस की प्रदेशाध्यक्ष जॉली सरकार ने कहा कि 16 दिसम्बर 2012 को 'दामिनी' के साथ केवल बलात्कार ही नहीं हुआ था बल्कि वीभत्स अत्याचार और उसकी दर्दनाक मौत ने सारे देश को झकझोर कर रख दिया था। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के विरोध में न सिर्फ दिल्ली बल्कि पूरे देश भर में आंदोलन फूट पड़े थे। स्कूल-कॉलेजों के छात्र इनमें स्वत:स्फूर्त रूप से कूद पड़े थे। आंदोलन के दबाव में जस्टिस वर्मा कमीशन गठित किया गया था। परंतु आज हम चार साल बाद भी देख रहे हैं कि 'दामिनी' के हत्यारों को कड़ी सजा नही दी गई है। इस प्रकार की घटनाओं की रोकथाम होने की बजाय, ये लगातार बढ़ती जा रही हैं। एन.सी.आर.बी. की रिपोर्ट के अनुसार दुष्कर्म और छेड़छाड़ के मामले में म.प्र. प्रथम स्थान पर है। उन्होंने आगे कहा कि खराब, गंदी, अश्लील फिल्मों और इंटरनेट के माध्यम से पोर्नोग्राफी को बढ़ावा दिया जाना इसका कारण है।

ऑल इंडिया डी.एस.ओ. के मुदित भटनागर ने कहा कि शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक स्तर का लगातार पतन हो रहा है। ऑल इंडिया डी.वाई.ओ. के श्रीवास्तव ने कहा कि समाज में बेरोजगारी और महंगाई बढ़ रही है। आज युवा तबका नशे में लिप्त होता जा रहा है, इसलिए भी महिलाओं, छात्राओं व बच्चियों पर अपराध बढ़ रहे हैं।

वक्ताओं ने म.प्र को पूर्ण शराब-मुक्त करने की मांग की और इसके लिए जोरदार जनआंदोलन गठित करने के लिये आगे आने की जनता से अपील की।

ग्वालियर (म.प्र.) : 29 दिसम्बर को ऑल इण्डिया एम.एस.एस., ग्वालियर द्वारा शहर के मुख्य मार्केट में महिलाओं और बच्चियों पर बढ़ते अपराधों की रोकथाम एवं म.प्र. में पूर्ण शराबबंदी लागू करने की मांग को लेकर आम जनता से हस्ताक्षर करवाए एवं अपील की कि आंदोलन में शामिल होकर इसे मजबूत बनाएं।

कॉमरेड जियाउद्दीन लाल सलाम

पटना : पटना में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) फुलवारी शरीफ इकाई के तत्वावधान में फुलवारी शरीफ के चुनौती कुआं स्कूल स्ट्रीट में 8 जनवरी 2017 को पार्टी के बुजुर्ग कार्यकर्ता कॉमरेड जियाउद्दीन की शोक सभा का आयोजन किया गया। कॉमरेड जियाउद्दीन का निधन 17 दिसम्बर 2016 को हुआ। वे 90 वर्ष के थे।

शोक सभा में कॉमरेड जियाउद्दीन को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए एसयूसीआई (सी) झारखंड राज्य सचिव कॉमरेड रबिन समाजपति ने कहा कि कॉमरेड जियाउद्दीन जमशेदपुर में टाटा फैक्ट्री में नौकरी करने के दौरान ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद की ओर आकर्षित हुए थे और बाद के दिनों में पटना आने पर एसयूसीआई (सी) के साथ जुड़ गये। फुलवारी शरीफ में पार्टी की नींव डालने में कॉमरेड जियाउद्दीन की महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे काफी सीधे-सादे और नेक दिल इन्सान थे। वे दिक्कत और परेशानी में रहने के बावजूद हमेशा हंसमुख रहा करते थे। कॉमरेड समाजपति ने कहा कि गरीबी और बदहाली इन्सान को अपने प्रण से डिगा देती है, विचार और आदर्श पर टिके रहना काफी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में कॉमरेड जियाउद्दीन का बेहद गरीबी में रहते हुए भी पार्टी के विचारों पर अंतिम सांस तक चलते रहना हम सब के लिए प्रेरणादायक है। कॉमरेड जियाउद्दीन के निधन से पार्टी ने एक अनुभवी, अडिग और अपने चरित्र व आचरण से लोगों को प्रेरित करने वाला कार्यकर्ता खो दिया।

एसयूसीआई (सी) पटना जिला सचिव कॉमरेड साधना मिश्रा, फिरोज आलम सिद्दिकी, इन्द्रजीत सिंह, डॉ. जौहर, रमेश शर्मा, मो. मुस्तफा आदि ने भी कॉमरेड जियाउद्दीन को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें याद किया। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (सी) पटना जिला कमिटी सदस्य अरूण कुमार ने की।

छात्रा के साथ दुष्कम की बर्बर घटना पर जताया रोष

पटना (बिहार) : वैशाली जिले के हाजीपुर में राजकीय अंबेडकर कन्या आवासीय उच्च विद्यालय की दसवीं की छात्रा के साथ दुष्कर्म कर हत्या किये जाने की बर्बर घटना के खिलाफ 10 जनवरी को आहूत राज्यस्तरीय प्रतिवाद दिवस के मौके पर राजधानी पटना में एआईएमएसएस, एआईडीवाईओ तथा एआईडीएसओ के संयुक्त तत्वावधान में जेपी गोलम्बर से भगत सिंह चौक तक विरोध मार्च निकाला गया।

भगत सिंह चौक पर विरोध सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि यह इंसानियत और मानवता को शर्मसार कर देने वाली घटना है। अपराधियों ने पहले 10वीं कक्षा की बच्ची के साथ गैंगरेप किया और फिर उसकी निर्ममतापूर्वक हत्या कर शव को छात्रावास के गेट के पास नाले में फेंक दिया। नेताओं ने कहा कि छात्र-युवाओं के नैतिक-सांस्कृतिक रीढ़ को तोड़ देने के लिए समाज में शासक वर्ग द्वारा फैलायी जा रही अश्लीलता, नग्नता व कुसंस्कृति का ही नतीजा है कि छोटी बच्चियों के साथ भी रेप, गैंगरेप तथा हत्या की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। आज बच्चियां और महिलाएं कहीं भी अपने को सुरक्षित महसूस नहीं कर रही हैं। नेताओं ने मांग की कि घटना की उच्च स्तरीय जांच की जाये, हत्यारे अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाये, मृत बच्ची के परिजनों को उचित मुआवजा दिया जाये और वर्तमान में उस छात्रावास में रह रही छात्राओं की समुचित सुरक्षा की गारंटी की जाये। सभा को एआईडीएसओ के पटना जिला सचिव कॉ. सरोज कुमार सुमन, एआईएमएसएस की अनामिका तथा एआईडीवाईओ के अनिल कुमार चांद ने संबोधित किया।

हवाला कांड के खिलाफ वाम दलों की रैली

ग्वालियर (म.प्र.) : म.प्र. के शहर कटनी में 500 करोड़ रुपये का हवाला कांड हुआ जिसमें मुख्य आरोपी स्थानीय भाजपा विधायक एवं मंत्री संजय पाठक है। कटनी शहर के एस.पी. गौरव तिवारी ने जब इस हवाला कांड का खुलासा किया और आरोपियों पर कार्यवाही की तो प्रदेश सरकार ने अपने मंत्री के बचाव में एस.पी. गौरव तिवारी का तबादला कर दिया। उनके तबादले के खिलाफ व उनकी पुन: कटनी शहर के एस.पी के रूप में बहाली की मांग को लेकर शहर की जनता हजारों की तादाद में सड़कों पर उतर आई। यहां तक कि एक दिन स्वत: स्फूर्त कटनी शहर पूर्ण रूप से बंद हुआ।

कटनी शहर में हुए 500 करोड़ रुपये के हवाला कांड व मंत्री संजय पाठक को प्रदेश सरकार द्वारा बचाये जाने के खिलाफ चार वामपंथी पार्टियों सीपीएम, सीपीआई, सीपीआई (माले) व एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ने नई सड़क से इन्दरगंज चौराहे तक रैली निकाली। वहां पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का पुतला जलाया गया। रैली में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के सुनील गोपाल और सीपीआई के नरेन्द्र पाण्डे आदि नेताओं सहित बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ताओं व समर्थकों ने भाग लिया।

ओलावृष्टि से नष्ट हुई फसल का मुआवजा देने बारे सौंपा ज्ञापन

भिवानी (हरियाणा): ओलावृष्टि से खराब हुई फसलों का मुआवजा देने की मांग को लेकर ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन (एआईकेकेएमएस) की जिला कमेटी भिवानी की तरफ से 30 जनवरी को मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार के नाम पांच सूत्री मांगों का एक ज्ञापन उपायुक्त भिवानी की मार्फत दिया गया।

ज्ञापन में मांग की गई कि जिला में ओलावृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों की विशेष गिरदावरी करवाई जाये और प्रभावित किसानों को 40,000 रुपये प्रति एकड़ मुआवजा दिया जाये। ओलावृष्टि से प्रभावित किसानों के सभी प्रकार के कर्जे माफ किये जाएं। सभी नहरों में अन्तिम छोर (टेल) तक पानी पहुंचाया जाये। नहरों में पानी कम से कम 15 दिन में एक बार सप्ताह भर जरूर दिया जाये। आवारा पशुओं का प्रबंध तुरंत किया जाये। हर तरह की कृषि सब्सिडी बहाल की जाये। ज्ञापन देने वाले प्रतिनिधिमण्डल में संगठन के जिला प्रधान कॉ. जिले सिंह, जिला सचिव कॉ. रोहताश सिंह, राजकुमार, सुखबीर, राजकुमार, संदीप प्रमुख थे।

8 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Publication : February 5, 2017

सर्वहारा दृष्टिकोण

7 फरवरी, 2017

आंगनवाड़ी कर्मियों ने दिया जंतर मंतर पर धरना

दिल्ली: आंगनवाड़ी कर्मियों के धरने को सम्बोधित करते हुए कॉ. अचिंत्य सिंहा

दिल्ली : ऑल इण्डिया यूनाइटिड ट्रेड यूनियन सेण्टर (एआईयूटीयूसी) से सम्बद्ध आंगनवाड़ी एम्पलाइज फेडरेशन ऑफ इण्डिया (एईएफआई) ने 27 जनवरी को जंतर मंतर पर धरना दिया और महिला व बाल विकास मंत्री श्रीमती मेनका गाँधी और वित्त मंत्री श्री अरुण जेतली को अपनी 10 सूत्री माँगों का ज्ञापन सौंपा।

मुख्यत: तीन राज्यों दिल्ली, उ.प्र. और हरियाणा से एईएफआई की घटक यूनियनों की आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियाँ और सहायिकाएं भारी संख्या में धरने में शामिल हुईं। वे अपनी लम्बित माँगों का समाधान करने में सरकार द्वारा बरती जा रही कोताही पर चिंता प्रकट करने और रोष जताने आई थीं। यूनियन नेत्रियों ने बताया कि बजट में की गई भारी कटौती के चलते स्कीम के क्रियान्वयन पर घोर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। बहुत से राज्यों में नियमित रूप से भुगतान नहीं किया जाता है। कई-कई महीने लग जाते हैं। प्रोत्साहन राशि बाध्यकारी नहीं है बल्कि राज्य सरकारों की मनमर्जी पर निर्भर है। अलग-अलग राज्यों में सेवा शर्तों व प्रोत्साहन राशि में काफी फर्क है और ये केन्द्रीय दिशा-निर्देशों से मेल नहीं खाती हैं। बिना किसी सेवानिवृत्ति लाभ के ही हजारों कर्मी रिटायर हो रही हैं। यूनियन ने 12वीं पंच वर्षीय योजना की सिफारिशों के मुताबिक वर्ष 2017-18 के बजट में आईसीडीएस स्कीम के लिए 36000 हजार रुपये आबंटित करने की माँग की है। 2011 से बढ़ी हुई महंगाई और न्यूनतम पारिवारिक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए जब तक एक निश्चित समयावधि के अन्दर 45वें श्रम सम्मेलन की सिफारिशों को लागू करते हुए उन्हें पक्का नहीं किया जाता तब तक मासिक मानदेय में अच्छी-खासी बढ़ोतरी करने, सेवानिवृत्ति पर एकमुश्त 5 लाख रुपये देने, सेवानिवृत्त कर्मियों सहित सभी को महंगाई भत्ते से जुड़ी पेन्शन 3000 रुपये प्रतिमाह देने, 6 अक्तूबर 2015 को दिये गए उनके 10-सूत्री माँग-पत्र की माँगें स्वीकार करने की भी माँग की गई। गौरतलब है कि आंगनवाड़ी कर्मियों का मानदेय पिछले 8 सालों से नहीं बढ़ा है जिसमें वर्तमान सरकार का 3 साल का शासनकाल भी शामिल है। यदि उन्हें महंगाई भत्ता दिया जाता तो आंगनवाड़ी वर्करों व हैल्परों को क्रमश: 4500 रुपये और 2250 रुपये प्रति माह और मिलते। यूनियन नेताओं ने केन्द्र सरकार का आगाह किया कि अगर उनकी माँगें नहीं मानी गई तो देश भर की 28 लाख आंगनवाड़ी कर्मी दीर्घस्थाई आन्दोलन करने को मजबूर होंगी जिसमें अनिश्चितकालीन हड़ताल और विभिन्न तरह के अवरोध आन्दोलन भी शामिल हैं।

एआईयूटीयूसी के सचिवमण्डल सदस्य कॉ. रमेश शर्मा के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने ज्ञापन सौंपे। इनमें आंगनवाड़ी कर्मियों की इस फेडरेशन की दो सह सचिव पुष्पा दलाल व शशिबाला और आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री व सहायिका वेलफेयर एसोसियेशन उ.प्र. की उपाध्यक्ष हीरावती शामिल थी। एआईयूटीयूसी के सचिवमण्डल सदस्य कॉ. सत्यवान ने धरने पर ज्ञापन पढ़ा। धरने की अध्यक्षता एईएफआई अध्यक्ष कमलेश चहल ने की।

मुख्य वक्ता एआईयूटीयूसी के सचिवमण्डल सदस्य एवं आंगनवाड़ी कर्मियों की इस फेडरेशन के सलाहकार कॉ. अचिंत्य सिन्हा थे।

अमेरिका में ट्रम्प-विरोधी प्रदर्शन

(पृष्ठ 1 का शेष)

क्षेत्र में लेकर चल रही हैं। भविष्य में भी ऐसा ही करेंगी।

ऑल इण्डिया एंटी-इंपीरियलिस्ट फोरम उम्मीद करता है कि पूंजीवादी व्यवस्था ही उनकी सभी समस्याओं की असली जड़ है यह समझ पाने के पहले कदम के तौर पर यह विरोध अमेरिकी जनता की मदद करेगा। दीर्घस्थायी आन्दोलन के जरिये इस व्यवस्था को उखाड़ फेंक कर ही समस्याओं का सही समाधान सम्भव है। हम उम्मीद करते हैं कि वर्तमान विरोध धीरे-धीरे आगे बढ़ेगा, सही नेतृत्व के तत्वावधान में जनवादी अधिकारों और मूल्यबोधों की रक्षा करने और उनको सम्प्रसारित करने के जरिये आखिरकार जनता पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति का रास्ता पकड़ पायेगी। इसी रास्ते अमेरिकी जनता की सही मायने में मुक्ति हासिल करना सम्भव होगा।

केन्द्रीय बजट 2017-18

(पृष्ठ 1 का शेष)

हालात ये हैं कि जनता के खून का आखिरी कतरा तक निचोड़कर बड़-बड़े ओगपतियों और कारपोरेट घरानों की तिजोरियां भरना ही आज एकमात्र मकसद हो गया है। तथ्य दर्शाते हैं कि 100 दिन काम देने के वादे के बावजूद साल में सिर्फ 35 दिन ही मनरेगा स्कीम के तहत काम दिया गया है। उद्योगपतियों के लिए बहुप्रचारित स्टार्ट-अप योजना को सभी जानकारों ने पूरी तरह असफल बताया है। योजना व गैरयोजना खर्च परस्पर मिला देने से स्पष्ट है कि इस सरकार को योजनाबद्ध उत्पादन के लिए निवेश की कोई जानकारी नहीं है। इसलिए बुनियादी उद्योगों में मामूली तेजी लाने के लिए अर्थव्यवस्था के चालू सैन्यीकरण के अंश के रूप में सैन्य बजट को 2.58 लाख करोड़ रुपये से बढ़ाकर 2.74 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया है जिसमें पूर्व-सैनिकों की पेन्शन की रकम शामिल नहीं है। कैग की ताजा रिपोर्ट में दर्शाया गया है कि स्वच्छ भारत कर की रकम या तो यूं ही पड़ी है या उसे दूसरे कामों में इस्तेमाल किया गया है। लेकिन स्वच्छ भारत अभियान का गुणगान करते समय वित्तमंत्री ने इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। इसी तरह उन्होंने यह भी नहीं बताया कि कृषि-उपकर से वसूली गई रकम का क्या हुआ। व्यक्तिगत आयकर में मामूली सी राहत के रूप में जो सौगात दी गई है वह पीड़ित मध्यम वर्ग के गुस्से को सोखने के लिए की गई है। जल्द ही देखने में आयेगा कि जीएसटी आने के बाद यह मामूली लाभ भी समाप्त हो जायेगा जिसमें अप्रत्यक्ष कर में सरपट वृद्धि होगी। पहले ही यह दिखाई पड़ रहा है कि प्रत्यक्ष करों में मामूली कमी करने से 20,000 करोड़ रुपये का जो घाटा हुआ है उसकी भरपाई सेवाकर आदि के जरिये अप्रत्यक्ष कर बढ़ाकर 60,000 करोड़ रुपये वसूल किये जायेंगे। यह रकम जनसाधारण से वसूली जानी है। कुल मिलाकर पूरा जोर कर्ज-संचालित अर्थव्यवस्था पर है जिसका घातक असर अमेरिका में पैदा हुए सब-प्राइम संकट में देखा जा चुका है जो पूरे विश्व में फैल गया था। लेकिन बैंकों की उस बड़ी रकम का कोई जिक्र नहीं किया गया जिसे बड़े-बड़े कारपोरेटों व कारखानेदारों ने चुकाया नहीं है और जिसे बट्टे खाते में डाल दिया गया है। इसी तरह विभिन्न मदों के लिए आवंटित धनराशि के स्रोत के बारे में कोई निश्चित चर्चा नहीं की गई है। जाहिर है कि सरकार या तो (3.48 लाख करोड़ रुपये की बजटीय राशि से ऊपर) कर्ज लेगी या फिर अतिरिक्त नोट छापेगी जिससे मुद्रास्फीति में और भी उछाल आना निश्चित है।

अत: यह बजट तथ्यों को दबाने और सच्चाई को छुपाने वाला है जिसका मकसद है शासक पूंजीपतियों व उनके पिट्ठुओं के स्वार्थ साधना और जनसाधारण के हितों की बलि चढ़ाना।

डरना नहीं जानते थे लेनिन ...

(पृष्ठ 4 का शेष)

नहीं क्योंकि वे जानते थे, उन्होंने अपने दिव्य चक्षुओं से देख लिया था कि क्रान्ति अवश्यम्भावी है और यह विजयी होगी ही; कि रूस में क्रान्ति साम्राज्यवादी युद्ध को समाप्त करने का रास्ता साफ करेगी, कि यह पश्चिम की युद्ध से थकी-हारी जनता को बेदार कर देगी, कि यह साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध में तब्दील कर देगी; कि क्रान्ति रिपब्लिक ऑफ सोवियत स्थापित करेगी और कि सोवियतों का यह गणतंत्र दुनिया भर में क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए एक गढ़ के रूप में काम करेगा। हम जानते हैं कि लेनिन की क्रान्तिकारी दूरदर्शिता की बाद में बेजोड़ सटीकता के साथ पुष्टि हुई।

दूसरा तथ्य : यह अक्टूबर क्रान्ति के प्रारंभिक दिनों की बात है, जब बागी कमाण्डर-इन-चीफ जनरल दुखोनिन को शत्रुतापूर्ण सशस्त्र झड़पें बन्द करने और जर्मनों के साथ युद्ध विराम के लिए वार्तालाप शुरू करने की खातिर मजबूर करने का प्रयास कर रही थी काऊंसिल ऑफ पीपल्स कमिसार्स। मुझे याद आ रहा है कि लेनिन, क्राइलेंको (होने वाला कमाण्डर-इन-चीफ) और मैं पैत्रोग्राद में फौज के जनरल स्टाफ हैडक्वाटर्स गए थे टैलीग्राफ पर दुखोनिन से बातचीत करने के लिए। यह बहुत ही खौफनाक क्षण था। दुखोनिन और फील्ड हैडक्वाटर्स ने काऊंसिल ऑफ पीपल्स कमिसार्स के आदेश को मानने से साफ-साफ इन्कार कर दिया। फौज के अफसर फिल्ड हेडक्वाटर्स के प्रभावधीन थे। जहाँ तक सैनिकों का सवाल है कोई नहीं कह सकता था कि यह एक करोड़ 40 लाख की सेना क्या करेगी क्योंकि ये तथाकथित सेना संगठनों के अधिनस्थ थे जो सभी तथाकथित सेना संगठन सोवियत सत्ता के विरोधी थे। जैसा कि हम जानते थे पैत्रोग्राद में भी मिलट्री कैडेटों की बगावत पनप रही थी। इसके अलावा केरेन्स्की पैत्रोग्राद पर धावा बोल रहा था। मुझे याद आ रहा है कि टेलीग्राफ पर बातचीत के समय एक अंतराल के बाद, लेनिन के चेहरे पर अचानक एक असाधारण चमक कौंध गई। साफ जाहिर था कि वे एक निर्णय पर पहुँच गए थे। उन्होंने कहा ''आईए वायरलैस स्टेशन चलें'', ''यह हमारे लिए उपयोगी होगा। हम जनरल दुखोनिन को बर्खास्त करने का स्पेशल आर्डर जारी करेंगे और उसकी जगह कॉमरेड क्राइलैंको को कमाण्डर-इन-चीफ नियुक्त करेंगे और अफसरों को दरकिनार करते हुए सैनिकों से अपील करेंगे, उनसे आह्वान करेंगे कि फौज के जनरलों को घेर लो, सशस्त्र झड़पें बन्द करो, आस्ट्रो-जर्मन सैनिकों के साथ सम्पर्क स्थापित करो और शान्ति कायम करने का काम अपने खुद के हाथों में लो।''

यह ''अंधेरे में एक छलांग'' थी। लेकिन लेनिन यह ''छलांग'' लगाने में झिझके नहीं; इसके विपरीत, उन्होंने उत्साहपूर्वक इसे अंजाम दिया, क्योंकि वे जानते थे कि सेना शान्ति चाहती है और इसके रास्ते की तमाम बाधाओं को दूर हटाते हुए वह शांन्ति कायम करेगी; वे जानते थे कि शान्ति स्थापित करने का यह तरीका आस्ट्रो-जर्मन सैनिकों पर अपना प्रभाव जरूर डालेगा और निरपवाद रूप से हर मोर्चे पर शान्ति के लिए जो तमन्ना है इस तरीके से उसे प्रोत्साहित करने का पूरा मौका मिलेगा।

हम जानते हैं कि यहाँ भी लेनिन की क्रान्तिकारी दूरदर्शिता की बेजोड़ सटीकता के साथ पुष्टि हुई।

एक प्रतिभावान की अंर्तदृष्टि, आसन्न घटनाओं के अंतर्निहित मायने को भांप लेने और तेजी से पकड़ लेने की क्षमता – यह थी लेनिन की खूबी जिसने उन्हें क्रान्तिकारी आन्दोलन के निर्णायक बिन्दुओ पर सही रणनीति निर्धारित करने और क्रान्तिकारी आन्दोलन के टेढे-मेढ़े रास्ते पर सही भूमिका निर्धारित करने में सक्षम बनाया। (संकलित रचनाएं खण्ड 6 पृष्ठ 54-66)

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."

Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com

फोन नं. : 011-25726631, 9868350503